भी नहीं खोली थीं कि घबराकर जाग उठे। खतरे का बिगुल बज रहा था। उन्होंने सुना कि शिवाजी पनहाला का किला छोड़कर विशालगढ़ चले गये हैं। शीदीजौहर जैसे पागल हो उठा। खबर लानेवाले पर उसे बहुत गुस्सा आया और उसने कहा, "मेरे पास दौड़े हुए क्यों आये ? उसके पीछे क्यों नहीं गए? वह निकल किधर से गया ? तुम कैसा पहरा देते हो ? कहीं मर गए थे ! अब मेरा मुंह क्या देख रहे हो ! जाओ, उसका पीछा करो। जाओ, जाओ !"

वह इस तरह गुस्सा हो रहा था कि सरदार फतेहखां दौड़ता हुआ वहां आया और उसने कहा, "शिवाजी का पीछा मैं करूंगा। मैं उसे बताऊंगा कि धोखा देने की क्या सजा होती है। वह ठगने में होशियार है तो मैं ठगों को पकड़ने में बेजोड़ हूं।"

शीदीजौहर बोला, "उसे जीता पकड़ना है और विशालगढ़ तक नहीं पहुंचने देना है।"

फतेहखां ने घमंड से कहा, "वह विशालगढ़ तक कभी नहीं पहुंच सकता। मेरे सिपाही उसका पीछा कर रहे हैं। मैं आपको बताने के लिए आया था। आप बेफिक्र रहें।"

शीदीजौहर ने कहा, "आप जाइए। मैं अभी आपके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीछे-पीछे आता हूं। आज मुझे उसका फैसला करना है। मेरी पूरी फौज आपके साथ है।"

इतना कहकर फतेहखां के पीछे-पीछे शीदीजौहर भी अपनी फौज को तैयार करने के लिए चला गया। देखते-देखते सिपाहियों ने एक बार फिर हथियार बांधने शुरू कर दिये। घोड़ों की टापों से एक बार फिर वह पहाड़ी जंगल गूंज उठा।

: २ :

इसी समय विशालगढ़ के रास्ते पर शिवाजी अपने सिपाहियों के साथ चले जा रहे थे। वह काफी तेज जा रहे थे और बार-बार पीछे मुड़कर देख लेते थे। सहसा उन्हें कुछ शोर सुनाई दिया। वह ठिठक गए। उनके मन में डर तो था ही। अब उन्हें यकीन हो गया कि दुश्मन को मेरे बच निकलने का पता लग गया है। उन्होंने एक सिपाही को इस बात की जांच करने के लिए भेजा।

थोड़ी देर में सिपाही ने आकर बताया कि दुश्मन सचमुच हमारा पीछा कर रहा है। शिवाजी महाराज घबराए नहीं। बोले, "कोई डर नहीं। यहां से विशाल-गढ़ कितनी दूर होगा?"

"कोई छः मील, महाराज।" सिपाही बोला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मगर महाराज, दुश्मन बहुत पास आ गया है।"

शिवाजी ने दृढ़ता से कहा, "दुश्मन हमें कभी नहीं पकड़ सकता। बाजीप्रभु कहां है?"

सिपाही तुरंत बाजीप्रभु देशपांडे को ढूंढ़ने चला। वह बहुत दूर नहीं था। सिपाही ने उससे कहा, "बाजी, महाराज तुम्हें बुलाते हैं। वह तुमसे बहुत खुश हैं। वह चाहते हैं कि तुम दुश्मन को रोको।"

सुनकर बाजीप्रभु उछल पड़ा, "भौंसले महाराज नें मुझे बुलाया है। मुझे दुश्मन को रोकना है। मैं उसे जरूर रोकूंगा। मैं उसे इस घाटी में सुला दूंगा।" यह कहता हुआ बाजीप्रभु महाराज के सामने आ पहुंचा और प्रणाम करके बोला, "महाराज ने मुझे किसलिए याद किया है?"

शिवाजी बोले, "बाजी, तुमने कई बार मेरे प्राणों की रक्षा की है; लेकिन आज सवाल मेरा ही नहीं है, सारे महाराष्ट्र का है। तुमको आज उसकी आन की रक्षा करनी है। इस घाटी को देखते हो न! काफी गहरी ढलान है। इसपर चढ़ना आसान नहीं है और हम ऊंचे पर हैं। यहांपर बड़ी-से-बड़ी सेना को आसानी से रोका जा सकता है। बाजी, मैं विशालगढ़ की ओर ब ता रहूंगा; लेकिन जबतक मैं वहां नहीं पहुंच जाता,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमको दुश्मन को यहीं रोकना होगा। बोलो, तुम कितने सिपाही लेकर यह काम कर सकोगे ?"

पास ही तानाजी खड़ा था। उसने कहा, "महाराज, आपने इतने छोटे-से काम के लिए बाजी को याद किया। मुझे दीजिए पांचसौ सिपाही। मैं दुश्मन को यहीं रोक रखूंगा।"

शिवाजी ने तानाजी की बात का जवाब नहीं दिया। बाजी कुछ सोच में पड़ गया था। शिवाजी ने पूछा, "बाजी, तुम क्या सोच रहे हो ?"

तानाजी ने कहा, "महाराज ! बाजी सोच रहा है कि सिपाहियों को लेकर दुश्मन को क्या रोकूंगा ! मैं अकेला ही सबकुछ कर सकता हूं।"

बाजी बोला, "अकेला कभी कोई कुछ नहीं कर सकता। सच यह है कि हम तो कुछ करते ही नहीं। करनेवाला कोई और है। बाजी और तानाजी तो नाम हैं। उन नामों के पीछे भवानी का बल है। महाराज, मुझे पचास सिपाही दीजिए। आपके किले में पहुंचने तक मैं दुश्मन को यहीं रोके रहूंगा।"

बाजी की यह बात सुनकर तानाजी फड़क उठा। बोला, "बाजी, यदि तुम पचास सैनिकों की मदद से दुश्मन को रोक सके तो मैं तुम्हारे लिए एक सुंदर चिता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाऊंगा। ऐसी सुंदर कि उसकी रोशनी में सारा दक्खिन जगमगा उठेगा और पुकार उठेगा——वह देखो, वह बाजी जल रहा है।"

बाजी मुस्कराने लगा। उसने कहा, "तानाजी, तुम मुझे नहीं जला सकते। इस ढाई हाथ के शरीर को जंगल के गीदड़ खावें या आग जलावे, उसका बाजी से कोई संबंध नहीं है। बाजी तो अपना काम पूरा करके भगवान में समा जायगा।"

शिवाजी उनकी बातें बड़े चाव से सुन रहे थे; लेकिन समय बहुत थोड़ा था। उन्होंने एकदम बीच में टोककर कहा, "अच्छा बाजी, तानाजी, छोड़ो इन बातों को, अब हम अलग होते हैं। काम पूरा होने पर फिर मिलेंगे।"

बाजी ने कहा, "जरूर मिलेंगे, महाराज।"

चलते समय शिवाजी महाराज ने बताया कि विशालगढ़ पहुंचते ही वे पांच बार तोप चलायंगे, जिसे सुनकर बाजीप्रभु को समझ लेना चाहिए कि वह ठीक-ठीक पहुंच गये हैं। तब उसे वहां से लड़ते हुए लौट पड़ना चाहिए। उसके बाद वह नई सेना लेकर दुश्मन के मुकाबले के लिए आ जायंगे। इतना कहकर उन्होंने अपनी पगड़ी उतारी और बाजीप्रभु के सिर पर पहना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी। बोले, "अब तुम सेनापति हो। तुम्हें आज महाराष्ट्र की आन की रक्षा करनी है। तुम उसके नाम के रखनेवाले हो। बस, इतना याद रखना।"

बाजीप्रभु ने कहा, "महाराज, आप चिंता न कीजिए। दुश्मन पास आ रहा है। आप यहां से चले जाइए। दुश्मन को महाराष्ट्र की तलवार का जौहर देखने दीजिए।"

: ३ :

शिवाजी चले गये। बाजीप्रभु अपने पचास सिपाहियों के साथ मोर्चे की तैयारी करने लगा। समय बहुत कम था और दुश्मन के घुड़सवारों की टापें बराबर पास आती जा रही थीं। मरहठे सैनिक ऊंचाई पर जरूर थे, लेकिन फिर भी वे सामने होकर लड़ने की हालत में नहीं थे। उन्होंने बड़ी सावधानी से मोरचेबंदी की और दुश्मन के घुड़सवारों के ऊपर आने की राह देखने लगे। बाजीप्रभु के साथी सूर्याजी ने दुश्मन के सवारों को बड़ी कठिनाई से ऊपर चढ़ते देखा। तब उसने कहा, "देखो बाजीप्रभु, इन लोगों को कितनी हैरानी हो रही है! फिर भी ये आगे बढ़े आ रहे हैं।

बाजीप्रभु बोले, "इन्हें आगे बढ़ने दो। आगे बढ़ना ही आज इनकी मौत है। हम इनके सुंदर घोड़ों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

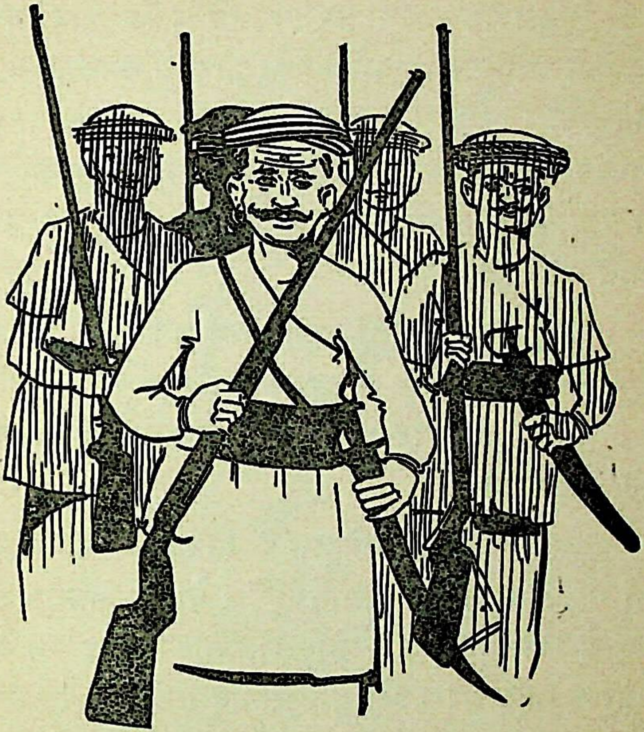

बाजीप्रभु देशपांडे और उनके कुछ सैनिक।

आज कुचल देंगे।"

सूर्याजी ने कहा, "लेकिन बाजीप्रभु, देखो तो उनकी गिनती कितनी अधिक है। ऐसा लगता है कि जैसे ठिड्डी-दल घाटी में घुसा आ रहा है।"

बाजीप्रभु ने कहा, "यह और भी अच्छा है। वे जितने अधिक होंगे उतनी जल्दी उनकी हार होगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि घोड़ों की टापों के साथ-साथ सिपाहियों का शोर भी उनको सुनाई देने लगा। कुछ देर वे चुपचाप सुनते रहे, सोचते रहे; लेकिन जब वह शोर बहुत पास आ गया तो सूर्याजी से न रहा गया। उसने बाजीप्रभु से कहा, "अब हमें भी आगे बढ़ना चाहिए।"

"हां," बाजीप्रभु ने कहा, "अब सब बंदूकें तैयार कर लो और जैसे ही मैं कहूं, चलानी शुरू कर दो।"

सब लोग तैयार हो गए और बाजीप्रभु के संकेत की राह देखने लगे।

दूसरी ओर जब फतेहखां के सिपाही काफी ऊपर आ गए तो उन्हें कुछ चिंता हुई। वे सब बेहद थक गए थे। रास्ता बड़ा खराब था; लेकिन फिर भी वे घबराए नहीं, बराबर आगे बढ़ते गए। बहुत ऊपर आ गये तो भी कहीं कुछ न दिखाई दिया। इसपर यह सोच-कर कि कहीं उसकी फौज घबरा न जाय, फतेहखां ने चिल्लाकर कहा, "सवारो, बढ़ते चलो। हम मंजिल पर आ पहुंचे हैं। फतह हमारी राह देख रही है। वह पहाड़ी चूहा किले तक नहीं पहुंच सकता। बस, ऊपर पहुंचने भर की देर है कि...।"

वह अपनी बात पूरी भी न कह पाया था कि ऊपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

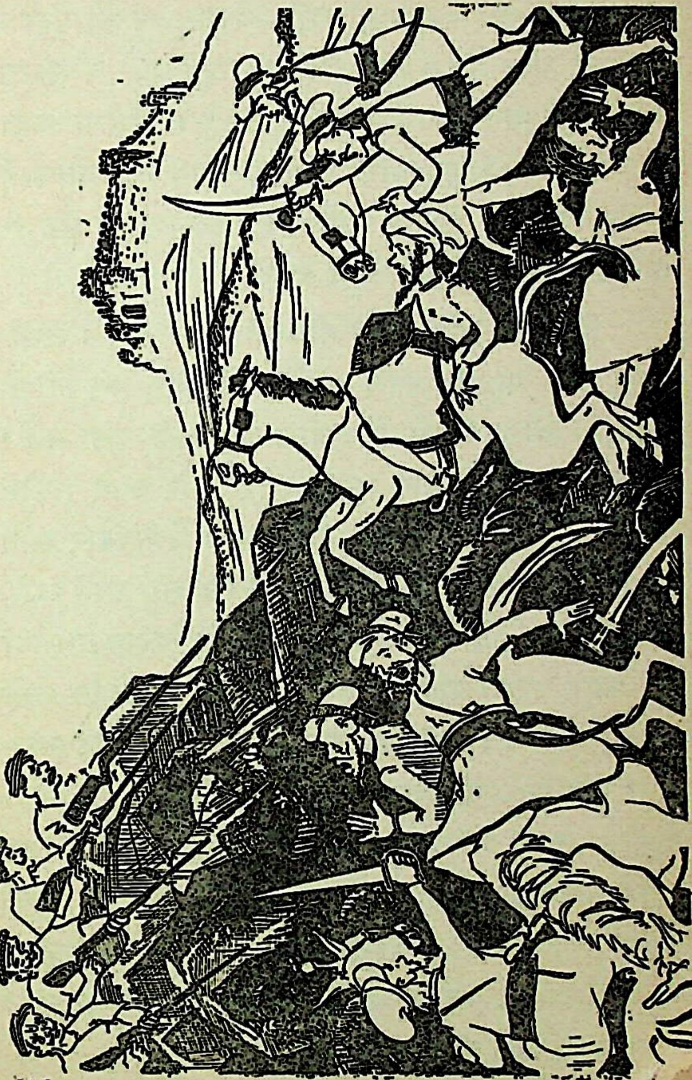

वाजीप्रभु और फतेहखाँ की सेनाओं में युद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से गोलियां छूटनी शुरू हो गईं। बराबर छूटती रहीं। फतेहखां और उसके सिपाही हैरान रह गए। वे समझ गए कि दुश्मन ऊपर छिपा हुआ है। रास्ता बड़ा खतरनाक था। एक बार तो ऐसा लगा कि अब उन्हें लौटना पड़ेगा; लेकिन उसी वक्त फतेहखां ने पुकार-कर कहा, "सिपाहियो, क्या देखते हो ? जवाब दो।"

फिर तो इधर से भी गोलियां छूटने लगीं। देखते-देखते वह पहाड़ी जंगल घोड़ों की टापों, बंदूकों की गोलियों और लोगों की चीख-पुकार से गूंज उठा। गोलियां छूटतीं, लोग झुकते और गिर पड़ते। घोड़े भगते और लुढ़क जाते। बीच-बीच में सरदार लोग चिल्लाते, "क्या करते हो, घोड़ों को रोको, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो।" सिपाही फिर आगे बढ़ते, लेकिन गोलियां तो कहर बरसा रही थीं और वे समझ रहे थे कि उन्हें लौटना पड़ेगा। इसीलिए सिपहसालार बार-बार पुका-रता था, फिर भी सिपाही रुके नहीं। वे लौट ही पड़े। ऐसी ढाल पर एक बार घोड़ों का मुंह मुड़ जाय तो फिर रुकने का सवाल ही नहीं उठता। ऊपर से मरहठे सिपाहियों ने उनको भागते देखा तो हँस पड़े। सूर्याजी ने मुंह बनाकर कहा, "बढ़े चलो, बढ़े चलो। बढ़ने का मतलब है पीछे हटना।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाजीप्रभु ने कहा, "यह घाटी मौत की घाटी है, सूर्याजी। भवानी की कृपा से इसे कोई पार नहीं कर सकता; लेकिन हमें ढीला नहीं पड़ना चाहिए। तुम समझते हो कि दुश्मन लौट गया है लेकिन ऐसा नहीं है। वे फिर आगे बढ़ेंगे।"

"वे जन्म भर आगे बढ़ते रहें," सूर्याजी बोले, "हमारी बंदूकें उनका स्वागत करने के लिए सदा तैयार हैं। वे आयं तो सही।"

इसी समय घोड़ों की टापों की आवाज फिर उनके कानों में पड़ी। वे समझ गए कि दुश्मन के घुड़सवार फिर आ रहे हैं; लेकिन वे डरनेवाले नहीं थे। चुपचाप फिर ढलान के पीछे जा छिपे।

बाजीप्रभु ने कहा, "देखो, जब वे ढलान के ऊपरी भाग में पहुंचें तब गोली छोड़ना।"

बड़ा अजीब दृश्य था। ये लोग ढलान के पीछे पेट के बल लेटे हुए थे। उधर घुड़सवार धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहे थे। जो पैदल सिपाही थे उनकी सांस फूल रही थी। सुस्ताने के लिए वे बार-बार लाशों का सहारा लेते थे। आखिर वह ऊपरी ढलान पर आ ही गये। उनके सेनापति ने उन्हें ढाढस बंधाने की पूरी कोशिश की; लेकिन मरहठे सैनिकों ने इस बार भी उन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोली चलाने का अवसर नहीं दिया। पहल इधर से हुई और एक बार फिर वह मैदान गोलियों की गूंज, घोड़ों की टापों और घायलों की चीख-पुकार से भर उठा। कुछ ही देर में वे फिर नीचे की ओर भागे। वे भागते थे, लौटते थे, गिरते थे, फिर उठते थे। और इधर से मरहठे सैनिक गोली छोड़ते जा रहे थे। वे आगेवालों को देख-देखकर निशाना मारते और उन्हें जमीन पर लिटा देते। इसका परिणाम यह हुआ कि दुश्मन के सिपाही रुक न सके। उनके घोड़े बहुत जोर लगाने पर भी आगे न बढ़ सके और वे इस बार भी भाग गए।

: ४ :

एक बार फिर मरहठे सिपाही खुशी से भर उठे। बाजीप्रभु ने कहा, "शिवाजी के सैनिकों के हाथ में भवानी की तलवार है। वे कभी नहीं हार सकते। उनकी हार का मतलब है भवानी का अपमान, और मरहठा सैनिक मर सकता है, भवानी का अपमान नहीं कर सकता, कभी नहीं कर सकता।"

कहते-कहते बाजीप्रभु का शरीर जोश से फड़क उठा। उसके साथ ही उसके सारे सैनिक चिल्ला उठे, "बेशक, मरहठा सैनिक भवानी का अपमान कभी नहीं कर सकता। कभी सोच भी नहीं सकता।" उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस आवेश से घाटी फिर गूंज उठी; लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि वे बेफिक्र हो गए थे। वे सिपाही थे और जानते थे कि दुश्मन आसानी से हार माननेवाला नहीं है। उसके पास हजारों की तादाद में सैनिक हैं। यह सोचकर बाजीप्रभु ने कहा, "सूर्याजी, इस बार दुश्मन के घुड़सवार नहीं आवेंगे, पैदल सिपाही आवेंगे और उनको हराना आसान नहीं होगा। इसलिए हमें इस बार बड़ी चतुरता से किलेबंदी करनी होगी। हो सकता है, वे अपनी पूरी सेना लेकर हमला बोलें।"

ऐसा ही हुआ। दुश्मन ने इस बार अपनी पूरी ताकत के साथ चढ़ाई की। वे सब पैदल थे। ढलान पर देखने से ऐसा लगता था जैसे सिपाहियों का जंगल उग आया है। वे बहुत धीरे-धीरे होशियारी से ऊपर चढ़ रहे थे। एक ओर वे हजारों सिपाही थे और दूसरी ओर केवल वे पचास मरहठे सैनिक !

बाजीप्रभु ने यह सब देखा और समझा। उसने पुकारकर कहा, "सैनिको, तैयार हो जाओ। इस बार दुश्मन फ़ैसला करने आया है। उनकी तादाद बहुत अधिक है; लेकिन तुमपर भवानी की कृपा है। तुम महाराज शिवाजी के प्यारे सैनिक हो। तुमने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाराज के सामने महाराष्ट्र की आन पर मिटने की सौगंध खाई है। बेशक हम मरेंगे; लेकिन स्वतंत्रता की जय-जय पुकारते हुए मरेंगे और तब मरेंगे जब विशालगढ़ से उठती हुई तोपों की आवाज से यह घाटी गूंज उठेगी।"

सूर्याजी ने कहा, "बेशक, इससे पहले हमारे प्राण शरीर नहीं छोड़ सकते।"

"प्राण बेशक शरीर छोड़ दें," बाजी ने कहा, "लेकिन हमारे शरीर तोप की आवाज़ सुनने तक डटे रहेंगे। वे दुश्मन को इस ढलान को कभी पार नहीं करने देंगे। शाबाश सिपाहियो! दुश्मन पास आ गया है। वह अपने ही सिपाहियों की लाशों को रौंद रहा है। आगे बढ़ो और उनको भी उन्हीं लाशों के पास लिटा दो।"

इतना कहकर बाजीप्रभु मौन हो गया और बंदूकों की आवाज तेजी से चारों ओर फैल गई। नीचे दुश्मन के सिपाहियों ने भी उस आवाज को सुना और उन्होंने बंदूकें चलानी शुरू कर दीं। दोनों ओर से फिर गोलियां बरसने लगीं। इस बार दुश्मन बहुत ताकतवर था। पहले तो उन्हें अपने साथ घोड़ों को भी संभालना पड़ता था। इस बार वे अकेले थे। इसीलिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेजी से आगे बढ़ रहे थे; लेकिन उनकी बंदूकों की गोलियां हवा में उड़कर रह जाती थीं। दूसरी ओर मरहठे सैनिकों की हर गोली उनके शरीर में घुस रही थी। वे रुकते थे, हांपते थे, निशाना लेना चाहते थे; लेकिन इधर से चलनेवाली हर गोली उनकी इस कोशिश के आगे एक चट्टान बनकर खड़ी हो जाती थी। बड़ा भयानक दृश्य था! लाशें लुढ़क रही थीं। अपने साथ कई बार तो वह जीवितों को भी घसीट ले जाती थीं। वे लुढ़क जाते थे, लेकिन जैसे बरसात में कीड़े निकलते हैं, वैसे ही उनके पीछे से कुछ और सिपाही निकल आते थे, उनका कोई अंत नहीं था। मरहठों ने इस बात को देखा और वे कुछ ठिठके। उनकी बंदूकें जवाब देने लगीं थीं। गोलियां समाप्त हो गई थीं। सूर्याजी ने कहा, "बाजीप्रभु, गोलियां खत्म हो गई हैं।"

"तो क्या हुआ!" बाजी ने जवाब दिया, "अपनी आत्मा को फौलाद बना लो। भवानी चाहेंगी तो हम अब भी दुश्मन को रोक सकते हैं। हम उसे रोकेंगे। हम महाराज शिवाजी के किले में पहुंचने तक यहां से नहीं हटेंगे। दुनिया की कोई भी ताकत हमें यहां से नहीं हटा सकती। सूर्याजी, सिपाहियों को चुपचाप ऊपर आ जाने दो और वे जब चोटी पर आ जायं तब तलवार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकर निकल पड़ो ।"

"ठीक है, सेनापति, ऐसा ही होगा ।" सूर्याजी ने कहा, "हम पीछे कभी नहीं हटेंगे । देखो तो दुश्मन के सिपाही भी तो शायद हमारी बात को समझते हैं । गोलियां बंद हो जाने पर वे ठिठक गए हैं । एक-एक कदम सोचकर रख रहे हैं ।"

बाजीप्रभु ने कहा, "धीरे-धीरे बोलो, सूर्याजी ! उनको बिल्कुल ऊपर तक आ जाने दो । बिल्कुल पास आ जाने दो ।"

"वे कितने अधिक हैं, बाजीप्रभु ! हमारा उनका कोई मुकाबला नहीं, लेकिन हमें यकीन है कि हम उन्हें हरा देंगे ।" सूर्याजी एक सांस में कह गया ।

बाजीप्रभु ने मजबूती से कहा, "बेशक हम उन्हें हरा-कर छोड़ेंगे । हम उन्हें यहां से लौटने को मजबूर कर देंगे । सूर्याजी, भवानी की तलवार क्या कभी हारना जानती है ? उसकी कृपा हमपर है । हम तो उसके हाथ में बस यंत्र हैं । सबकुछ वही कर रही है । लो देखो, वह फतेहखां आ गया । सैनिको, तैयार हो जाओ । शाबाश, यही अवसर है, अब हमें भवानी और शिवाजी दोनों की कृपाओं का बदला चुकाना है । आगे बढ़ो ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सैनिको ! तैयार हो जाओ" —बाजीप्रभु

इतना कहकर उसने बिगुल बजाया और उसीकी आवाज के साथ तलवारों की खनखनाहट शुरू हो गई। दोनों दलों के सिपाही आमने-सामने आ गये। लेकिन मरहठे सिपाही इतनी तेजी से दुश्मन के सिपाहियों पर टूटे कि वे एकाएक अपनेको संभाल न सके और काफी लोगों को मुंह की खानी पड़ी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फतेहखां को बड़ा गुस्सा आया। उसने चिल्लाकर कहा, "हूं, चूहे यहांपर छिपे हुए हैं। मैं अभी तुम्हें मजा चखाता हूं!"

बाजीप्रभु यह सुनकर बड़े ज़ोर से हँसा, बोला, "चूहों के दांत नहीं देखे हैं, खां साहब। यह देखिए।"

यह कहकर उसने बड़े जोर से उसपर वार किया। साथ ही सूर्याजी ने और दूसरे सिपाहियों ने भी उसी तेजी से सिपाहियों को काटना शुरू कर दिया।

बाजीप्रभु ने पुकारकर कहा, "शाबाश सैनिको! तुम्हें शिवाजी ने चुना है। वे तुमको, केवल तुमको, मरहठों की आन की रक्षा करने के योग्य समझते है।"

उधर से फतेहखां ने आवाज लगाई, "शाबाश सिपाहियो! मुट्ठी भर धोखेबाज पहाड़ियों के जबड़े तोड़ डालो। उन्हें कुचल दो। शिवाजी हमारी राह देख रहा है।"

बाजीप्रभु की आवाज गूंजी, "शाबाश सैनिको! भवानी आकाश से तुमको देख रही है। तुम्हारे हाथ में उसकी तलवार है। तुम नहीं, भवानी लड़ रही है। तुम्हें केवल हाथ चलाना है।"

: ५ :

दोनों ओर से इस प्रकार पुकार उठ रही थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और पुकार के साथ-ही-साथ खूंखार लड़ाई हो रही थी। मरहठे सैनिक तलवार लेकर तेजी से नीचे की ओर भागते और तलवार चलाने के साथ-साथ कइयों को वैसे ही लुढ़का देते। लेकिन आखिर तो वे पचास ही थे! दुश्मन के सैकड़ों सिपाही नीचे को लुढ़कते दिखाई देते तो उनके साथ ही सैकड़ों ऊपर को चढ़ते हुए भी दिखाई देते। सूर्याजी ने जी-जान से उनको पछाड़ने की कोशिश की। जब वह इस तरह जान हथेली पर रखे लड़ रहा था तो सहसा उसकी नजर बाजीप्रभु पर पड़ी। एक भाला बड़ी तेजी से उसकी ओर बढ़ रहा था। उसने चिल्लाकर कहा, "बाजी-प्रभु, उधर देखो, वह भाला!" लेकिन बाजीप्रभु ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। सूर्याजी फिर चिल्लाया, "बाजी, बाजीप्रभु, दूसरी ओर से तलवार आ रही है। ठहरो बाजीप्रभु, ठहरो, मैं आ रहा हूं।" लेकिन इस पुकार का भी कोई असर नहीं हुआ। बाजीप्रभु बराबर आगे बढ़ता रहा और देखते-देखते भाला और तलवार दोनों की चोट उसपर पड़ी। वह गिर पड़ा। सूर्याजी यह देखकर कांप उठा। उसके मुंह से निकला, "आह, बाजीप्रभु गिर गया!" लेकिन दूसरे ही क्षण वह संभलकर चिल्ला उठा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं-नहीं, बाजीप्रभु कभी नहीं गिर सकता ! बाजीप्रभु सबसे लड़ रहा है ! दुश्मन की सेना के रास्ते में लाशें पटी पड़ी हैं। हमारे सैनिक धीरे-धीरे सो रहे हैं और भवानी अट्टहास कर रही है !"

इस तरह से पुकारता हुआ सूर्याजी बाजीप्रभु के बिल्कुल पास आ गया। बाजीप्रभु बुरी तरह घायल हो गया था; लेकिन जमीन पर गिरते-गिरते उसने मोरो देशपांडे से कहा, "जल्दी करो, किले की तरफ बढ़ो और लौटकर मुझे सूचना दो कि महाराज शिवाजी किले में पहुंच गये हैं या नहीं ! जबतक तुम लौटोगे नहीं तबतक मैं मरूंगा नहीं। मेरा अंत आ गया है, लेकिन मेरे काम का अंत अभी नहीं आया है।"

यह सुनकर मोरो देशपांडे पागलों की तरह किले की ओर भागा और बाजीप्रभु ने सूर्याजी को बुलाकर पूछा, "हमारे कितने सिपाही बचे हैं ?"

सूर्याजी बोला, "केवल दस !"

बाजीप्रभु ने उसी उत्साह से जवाब दिया, "कोई चिंता नहीं, आगे बढ़े चलो। मोरो देशपांडे नहीं आता तबतक आगे बढ़े चलो।"

वे इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि तोपों की आवाज उनके कानों में पड़ी। सब एक साथ उछल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़े। मोरो देशपांडे लौट आया था। वह चिल्ला-कर कह रहा था, "बाजीप्रभु, महाराज किले में पहुंच गए। महाराज किले में पहुंच गए।" बाजीप्रभु की आंखें चमक उठीं। उसने हर्ष से चिल्लाकर कहा, "हां देशपांडे, महाराज किले में पहुंच गए। महाराज किले में पहुंच गए। मेरा काम पूरा हो गया। तुम सब मुझे भी किले में ले चलो।"

इतना कहते ही बाजीप्रभु की गरदन एक ओर को झुक गई।

सूर्याजी सहसा उसके ऊपर झुका और उसने रुंधे हुए कंठ से कहा, "मोरो देशपांडे, बाजीप्रभु हमें छोड़-कर अकेला चला गया। जल्दी करो। उसको किले में ले चलो। कहीं दुश्मन के सिपाही उसके पास न आ जायं!"

मोरो देशपांडे ने जवाब दिया, "सूर्याजी, अब जल्दी करने की जरूरत नहीं है। महाराज शिवाजी सेना लेकर अपने आप अपने सेनापति को लेने आ रहे हैं। सुनते नहीं उनकी पुकार? तानाजी कैसा चिल्ला रहा है। और वह देखो, दुश्मन कैसी तेजी से नीचे की ओर भाग चला है!"

सचमुच उस समय लड़ाई फिर तेजी पर आ गई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। बेशक, उनसे वह कुछ दूर थी; लेकिन वहां से वह सबकुछ देख-सुन सकते थे।

शिवाजी महाराज अपने वचन के अनुसार नई सेना लेकर आगए थे और दुश्मन भाग रहा था। दुश्मन के सिपाही थके हुए थे और मरहठे सैनिक अपने पूरे जोर में थे।

कुछ ही देर में लड़ाई का फैसला हो गया। दुश्मन के सिपाही मुंह की खाकर लौट गए। वह मैदान, जो कुछ ही देर पहले गोलियों की आवाज से, तलवारों की खनखनाहट से, घोड़ों की टापों से और घायलों की चीख-पुकार से गूंज रहा था, मौन हो गया। चारों ओर सन्नाटा छा गया।

: ६ :

वे फिर मिलने की बात कह कर गये थे। यह कैसा अनोखा पुनर्मिलन था। शिवाजी बाजीप्रभु के पास आए। उन्होंने बड़े आदर से अपने उस महान सेनापति को नमस्कार किया। कुछ देर तक चुपचाप खड़े हुए उसकी ओर देखते रहे। फिर धीरे-धीरे बोले, "बाजीप्रभु, तुम बहुत बड़े थे। तुम बहुत बड़े वीर थे। तुम्हारे भाग्य पर देवता भी ईर्ष्या करते होंगे। तुम मरे नहीं हो। तुम इस समय तेंतीस द्वारों से होकर स्वर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"वाजीप्रभु तुम वहुत वड़े वीर थे, तुम्हारी जय हो ।" —शिवाजी

में निवास कर रहे हो और इस धरती पर शिवाजी तुम्हारे चरणों में खड़ा है । वह तुम्हारे गौरवशाली मुंह को देख रहा है । तुमने महाराष्ट्र की लाज रखी है । तुमने अपने वचनों की लाज रखी है । बाजीप्रभु, मैं चाहता हूं कि जब मेरा अंत समीप आये तो मैं भी तुम्हारी ही तरह मौत को गले लगाऊं । तुम्हारी जय हो !"

इतना कहकर महाराज शिवाजी ने अपने बहादुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेनापति को एक बार फिर प्रणाम किया। उनका दिल भरा आ रहा था; लेकिन वह रोने का अवसर नहीं था। बाजीप्रभु ने वह काम किया था, जिसके लिए दुनिया उन्हें सदा याद रखेगी। बेशक वह हथियारों की लड़ाई थी; लेकिन हथियारों का सवाल यहां इतना नहीं है, जितना अपने वचन की रक्षा का और वचन की रक्षा में अपने प्राणों का मोह न करने का है। बाजीप्रभु ने अपने प्राणों का मोह नहीं किया और जो प्राणों का मोह नहीं करते, वे सचमुच बड़े होते हैं। दुनिया उनकी पूजा करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# देवताओं का प्यारा

: १ :

काठ का बना हुआ वह सुंदर महल इंद्रपुरी को भी मात करनेवाला था। देश-विदेश के कारीगरों ने सालों रात-दिन एक करके मेहनत की थी, तब कहीं वह तैयार हुआ था। महल ही में एक बहुत सुंदर बगीचा था। बगीचे के बीचों-बीच एक तालाब था। तालाब का पानी शीशे की तरह साफ़ था। तालाब के एक किनारे दूध की तरह सफ़ेद पत्थर के दो आसन थे। एक आसन पर थे सम्राट चंद्रगुप्त के पुत्र और उत्तराधिकारी मगध-सम्राट महाराज बिंदुसार और उनकी पत्नी महारानी सुभद्रांगी, और दूसरे पर ऊंचे माथे और सन-सी सफ़ेद दाढ़ीवाले एक साधु। साधु का नाम पिंगलावत्साजीव था।

दो सुंदर और होनहार बालक तालाब के पास खेल रहे थे। दोनों बालक खूब गोरे थे। बड़ा बालक छोटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को देखते हुए कुछ मोटा था और स्वभाव से उद्धत लगता था। वह तालाब के पानी में पड़ती हुई साधु पिंगला-वत्साजीव की दाढ़ी की परछाईं को देख रहा था और

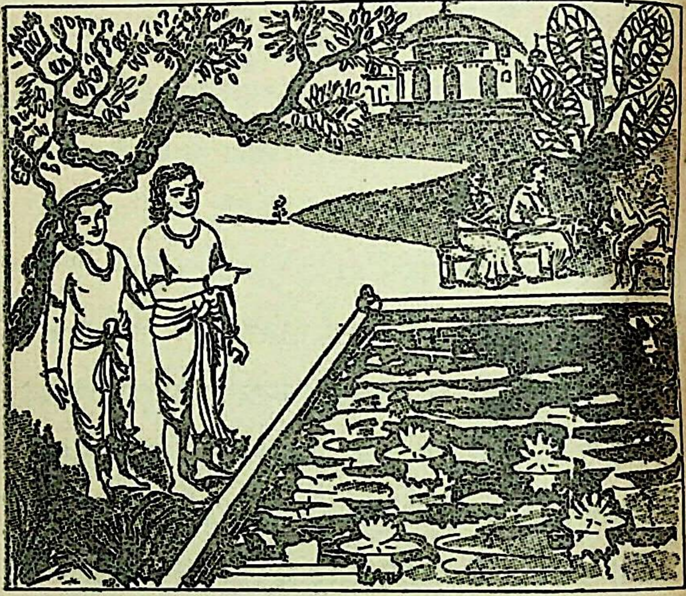

दो सुंदर बालक तालाब के पास खेल रहे थे।

थोड़ी-थोड़ी देर में हँस पड़ता था। छोटा बालक बड़े से दुबला होते हुए भी शांत था। वह टकटकी लगाये पानी में खेलते हुए मच्छों को देख रहा था। बड़े बालक का नाम था सुशीम, छोटे का अशोक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाएक महाराज बिंदुसार ने साधु से कहा—"महात्मना, आपने बताया नहीं कि मेरे राजसिंहासन का उत्तराधिकारी कौन होगा ?"

साधु बड़े असमंजस में पड़ा हुआ था, राजा का सीधा सवाल सुनकर उसने जवाब दिया—"राजन, जो ईश्वर के बनाये हुए नियम हैं, उन्हींके अनुसार मनुष्य-समाज का काम चलता है। जैसा होता आया है, वैसा ही होगा।"

यह सुनते ही सम्राट प्रसन्न हो गए। वह उठकर खड़े हो गए और बोले—"महाराज, आपके कथन से मुझे बहुत शांति मिली, अब मैं जाता हूं। मेरे मंत्री आपकी दक्षिणा की व्यवस्था कर देंगे।"

इतना कहकर सम्राट चले गए।

क्रोध से महारानी सुभद्रांगी का चेहरा तमतमा आया। उन्होंने कहा—"दक्षिणा के लिए साधु भी झूठ बोल सकते हैं, यह मैंने आज ही देखा।"

साधु ने हँसकर कहा—"साधु झूठ नहीं बोलते, महारानीजी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महारानी ने बात काटी--"तो फिर आपने मुझसे यह क्यों कहा था कि मेरा पुत्र अशोक ही आगे चलकर राजा होगा ?"

साधु ने अडिग भाव से कहा—"मैंने नहीं कहा था।"

रानी ने डांटकर कहा--"नहीं कहा था ?"

साधु ने उसी भांति कहा--"जी नहीं। मैंने नहीं कहा था। कहा तो था नक्षत्रों ने, ग्रहों ने, ज्योतिष-विद्या ने। मैंने तो बताया भर था।"

रानी के चेहरे का भाव बदल गया, परंतु तुरंत ही फिर से शंका जाग उठी--"परंतु आपने अभी-अभी महाराज से कहा..."

साधु ने कहा--"मैंने यही कहा न कि जैसा होता आया है वैसा ही होगा ? इसमें कोई संदेह नहीं महारानीजी, कि राजगद्दी का अधिकारी सबसे योग्य व्यक्ति ही होता है। महाराज नंद की गद्दी पर महाराज चंद्रगुप्त का बैठना ईश्वरीय न्याय ही था।"

रानी ने उदास होकर कहा--"कितने दुख की बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि अशोक के सुशीम से हर तरह से अच्छा होते हुए भी महाराज सुशीम को ही राजगद्दी देना चाहते हैं।"

साधु ने समझाया—"महाराज का सोचना भी गलत नहीं है; महारानीजी। आखिर सुशीम बड़ा है।"

रानी तत्काल बोल उठी—"बड़े होने से क्या होता है? सभी मानते हैं कि अशोक सुशीम से कहीं अच्छा है, फिर मंत्री लोग भी तो अशोक को ही चाहते हैं।"

साधु को ताज्जुब हुआ, बोला—"क्यों महारानीजी, क्या कोई नई बात हुई?"

रानी ने बताया—"एक दिन खेल-खेल में सुशीम ने मंत्री खल्लाटक पर खटका गिरा दिया। इससे मंत्री को डर हो गया है कि अगर बड़े होने पर सुशीम को राज्य मिलेगा, तो वह जरूर ही मंत्रियों पर हथियार फेंकेगा। इसीलिए सब मंत्री सुशीम के खिलाफ हो गए हैं।"

साधु को होनहार साफ दिखाई दिया। उसके लिए किस तरह सामान जुटना शुरू हो गया था, यह भी उससे छिपा न रहा। मगध के राज्य में मंत्रियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिकार बहुत थे और उनका नाराज हो जाना एक खास मतलब रखता था। साधु ने आसमान की ओर देखकर कहा—"हे भगवान, तेरी महिमा अपरंपार है!"

रानी ने प्रसन्न होकर अपने गले से मोतियों की माला उतारकर साधु को दक्षिणा के रूप में देनी चाही। साधु ने मनाकर दिया। कहा—"पेट भरने के लिए एक बार झूठ बोलकर दक्षिणा ले लेना चाहे ठीक भी हो, परंतु सचाई के बदले में दक्षिणा लेना सचाई का सौदा करना होगा। साधु लोग ऐसा नहीं करते। रानी, यह दक्षिणा अपने पास ही रखो।" यह कहकर साधु उठकर चल दिया। रानी ताकती रह गई।

दूर पर दोनों बालक खेलने में मग्न थे। उन्हें इसकी कोई खबर तक नहीं थी।

: २ :

कई साल बीत गए। सुशीम और अशोक जवान हो गए। महाराज बिंदुसार सुशीम को राजगद्दी दिलाने के लिए और भी अधिक कोशिश करने लगे। मंत्री लोग और भी ज्यादा मजबूती से अशोक के साथ हो गए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाराज बिंदुसार यह देख-देखकर बहुत चिंतित थे। इसी बीच तक्षशिला की जनता विद्रोह कर उठी। महाराज बिंदुसार बहुत समझदार थे। उन्होंने सोचा कि विद्रोह दबाने के लिए अशोक को भेज दें। उसे कामयाबी न मिली तो लोगों में उसकी चाह कम हो जायगी और मंत्रियों को कुछ भी कहने का मौका न रह जायगा। वह सोचकर उन्होंने अशोक को तक्षशिला का विद्रोह दबाने के लिए भेज दिया।

परंतु महाराज बिंदुसार का अनुमान गलत निकला। अशोक के आने की खबर मिलते ही विद्रोह शांत हो गया और तक्षशिला के रहनेवालों ने नगर के साढ़े तीन योजन आगे आकर हाथों में मंगल-घट लेकर अशोक का स्वागत किया। विद्रोहियों ने ऐलान कर दिया कि हम न तो कुमार के विरुद्ध हैं, न राजा बिंदुसार के।

इस प्रकार बिना खून बहाये विद्रोह दब गया। सचमुच तब का जमाना देखते हुए यह एक अनहोनी घटना थी। इससे अशोक का मान बहुत बढ़ गया। साबित हो गया कि वह बड़ा ही होशियार और लोगों को पसंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनेवाला शासक है ।

महाराज बिंदुसार की चाल खाली गई । अशो
ने तक्षशिला में बहुत अच्छा शासन जमा दिया । परंतु
बिंदुसार को तो सुशीम के लिए रास्ता खोलना था
इसलिए उन्होंने तक्षशिला में सुशीम को नियुक्त कर
दिया । सुशीम के लिए वहां की जनता ने कोई उत्साह
नहीं दिखाया । अशोक की तरह उसकी अगवानी भी
नहीं की । बाद में सुशीम के बुरे व्यवहार से दुखी होकर
जनता फिर से विद्रोह कर बैठी । सुशीम ने खून बहा
कर विद्रोह को दबाना चाहा । उसने विशाल मगध
सेना की सहायता भी ली । फिर भी उसके किये कु
न हो सका ।

हारकर महाराज बिंदुसार फिर से तक्षशिला
अशोक को भेजने पर मजबूर हुए । अशोक के पहुंच
ही विद्रोह फिर से शांत हो गया और तक्षशिला पह
की ही भांति मगध-साम्राज्य का अंग बन गया । अशो
जो अपने पिता का प्यारा न था, जनता की आंखों
तारा बन गया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन घटनाओं से अशोक की लोकप्रियता बहुत बढ़ गई और मंत्री तो सभी उसके पक्ष में हो गए। महाराज बिंदुसार की मृत्यु के बाद मंत्रियों ने अशोक ही को मगध का राजा बनाया। सुशीम ने इसका विरोध किया और अशोक को राजगद्दी के लिए युद्ध करना पड़ा। युद्ध में सुशीम की हार हुई। वह मारा गया और सुशीम का बेटा निगरोध भागकर बौद्ध भिक्षु हो गया। कुछ छोटे-मोटे विद्रोह और भी हुए, मगर अशोक ने सबको होशियारी से दबा दिया और बेखटके राज्य करने लगा।

सात बरस तक बेखटके राज्य कर चुकने के बाद एक सवाल उठ खड़ा हुआ। यह सवाल था कलिंग का। दक्षिण में कलिंग राज्य की ताकत बहुत बढ़ रही थी। कलिंग देश के लोग समुद्री व्यापार खूब करते थे और देश-विदेश से धन लाकर अपने देश को धनवान बनाते थे। कलिंग और मगध की लाग-डांट पहले ही से चली आ रही थी और उस जमाने में चलन ही ऐसा था कि एक राजा दूसरे को दबाकर या हराकर अपने वश में कर लेना बहुत गौरव की बात समझता था। राजाओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इज्जत ही इसी बात से होती थी कि उन्होंने अपने राज्य को कितना बढ़ाया है।

कलिंग की बढ़ती हुई ताकत देखकर अशोक के मंत्रियों ने उसे सलाह दी कि उसे कलिंग को अपने वश में कर लेना चाहिए, नहीं तो एक-न-एक दिन स्वयं कलिंग ही मगध को युद्ध करने के लिए ललकारेगा।

अशोक बड़ा वीर था। उसने सोचा कि इस महा-युद्ध से उसका यश बढ़ेगा। यही सोचकर उसने कलिंग के राजा को चुनौती दे दी। कलिंगवासी बड़े ही स्वाभिमानी थे। फिर न्याय भी उन्हींके पक्ष में था वे भला पीछे क्यों हटते ? उन्होंने चुनौती मंजूर कर ली। दोनों ओर लड़ाई की तैयारियां होने लगीं।

सब कोई जानता था कि मगध की विशाल सेना और अशोक की बहादुरी के सामने कलिंग ठहर नहीं सकेगा, मगर कलिंगवासियों के आत्म-सम्मान की भावना के लिए सबके दिलों में मान था। स्वयं महा-रानी पद्मावती, जो अशोक की रानी थी, इस युद्ध के खिलाफ थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पद्मावती ने अशोक को समझाने की कोशिश की—“भला सोचिये, कितनी माताओं की गोद के लाल छिन जायंगे ? कितनी सुहागिनों की मांग का सिंदूर धुल जायगा ? कितनों के कलेजों के टुकड़े दर-दर ठोकरें खाते फिरेंगे ?”

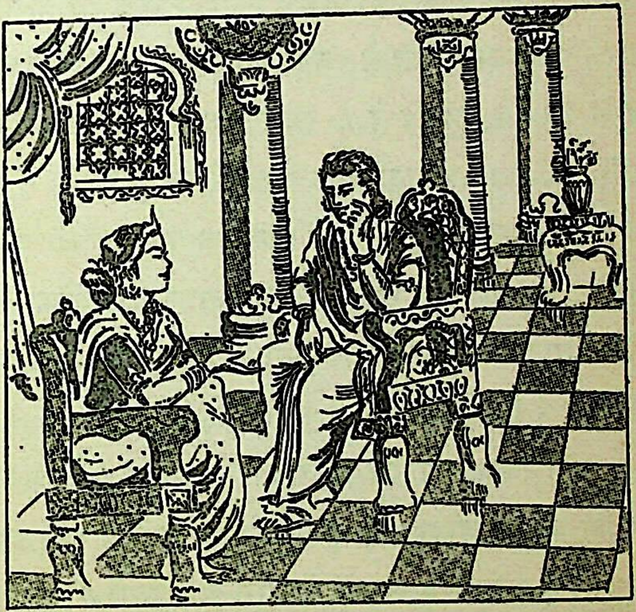

रानी पद्मावती ने अशोक को समझाने की कोशिश की ।

परंतु अशोक पर युद्ध का नशा सवार था । उस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पद्मावती की इस प्रार्थना का कोई असर न हुआ। उसे भी उस समय संसार के सामने अपनी वीरता का सबूत पेश करना था।

यह एक ईश्वर का नियम-सा है कि जहां बुरी ताकतें जोरदार होती हैं, वहीं पर अच्छी शक्तियां भी अपना काम शुरू कर देती हैं। जहां युद्ध की तैयारी करनेवाले जमा होते हैं वहीं शांति की पुकार उठाने वाले भी आ पहुंचते हैं। इधर युद्ध की तैयारियां हो रही थीं, इधर प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य उपगुप्त भी नगर के बाहर आकर ठहर गए थे। अशोक का भतीजा और सुशीम का पुत्र निगरोध भी उनके साथ था। निगरोध रोज नगर में भिक्षा लाने जाता और लौटकर आचार्य उपगुप्त को युद्ध की खबरें सुनाता।

एक दिन निगरोध ने आकर उपगुप्त को खबर दी कि कलिंग-नरेश ने सम्राट की चुनौती स्वीकार कर ली है और अब लाखों बेकसूर आदमियों की हत्या हुए बिना नहीं रहेगी।

आचार्य उपगुप्त समय की चाल को बारीकी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ देख रहे थे। उन्हें मालूम हो गया था कि युद्ध टल नहीं सकता। फिर भी उन्होंने खुद धीरज रखा और निगरोध को भी धीरज रखने की सलाह दी। आचार्य ने निगरोध को आदेश दिया कि तुम अशोक के कानों तक भगवान बुद्ध के करुणा के संदेश को पहुंचाओ। कौन जाने उसे सुनकर अशोक का मन हिंसा से फिर जाय! निगरोध ने इस आदेश को खुशी-खुशी मान लिया।

मगर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है? निगरोध तो अशोक तक पहुंच भी नहीं सका! युद्ध होकर रहा। बहादुर कलिंगवासी जान पर खेल कर लड़े। एक-दो नहीं, पूरे तीन लाख आदमी युद्ध में काम आये। अनाथों के चीत्कार से आसमान गूंज उठा। बेकसों के खून से धरती रंग गई।

जीत! हां, सबने उसे जीत ही माना। मगध की जनता अशोक की जय-जयकार करने लगी। मंत्री लोग फूले नहीं समाये। मगध-साम्राज्य का यश पहले से सौ गुना बढ़ गया।

मगर कहते हैं कि बेकस आह कभी बेकार नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती। उसमें लोहे तक को भस्म कर देने की ताकत होती है, क्योंकि वह सीधे दिल पर चोट करती है।

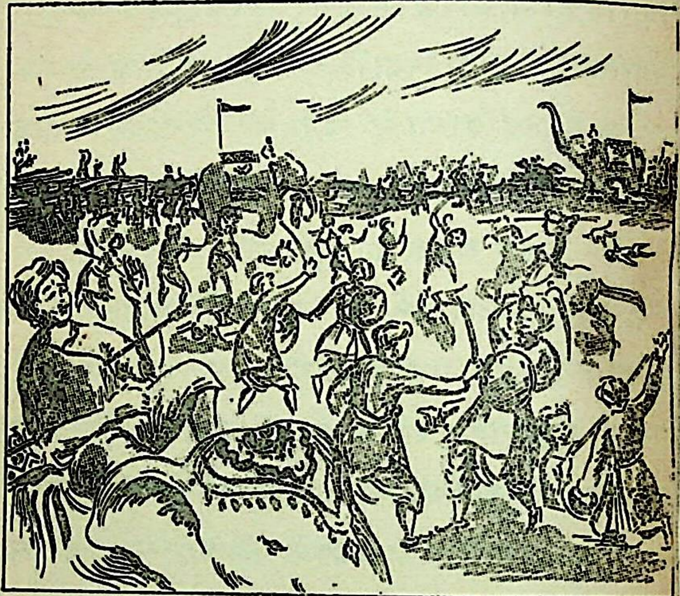

कलिंग की लड़ाई

बेकस कलिंगवासियों की आहों ने अशोक के दिल पर चोट की। अशोक वीर था, उसे लोहे से लोहा बजाना खूब आता था। मगर इस चोट की उसे आदत नहीं थी। वह तिलमिला उठा।

सोचने लगा—"हाय, यह मैंने क्या कर डाला? 

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या यही युद्ध है, क्या यही जीत है, जिसमें बेकसूरों की गरदनें कटती हैं और जिसकी जयकारों में बेकसों की आहों का धुआं होता है ? ऐसा ही है तो धिक्कार है सारी जीत को, सारी वीरता को !"

अशोक ने पद्मावती से कहा—"रानी तुम ठीक कहती थीं। काश मैंने पहले ही तुम्हारी बात मान ली होती ! मैं व्यर्थ ही इतने बेकसूरों की हत्या का कारण बना। आज जो सबकी नजरों में महान विजेता है, वह स्वयं अपनी नजरों में कितना गिरा हुआ है !"

अशोक को बड़ा पछतावा हो रहा था। पश्चाताप के क्षण वैसे ही होते हैं, जैसे गर्म लाल लोहा। उसे मन-माने रूप में ढाला जा सकता है। इन्हीं क्षणों से गुजर-कर आदमी बदल जाता है।

महारानी पद्मावती जान गईं कि यही समय है जब-कि अशोक बदल सकता है। उन्होंने कहा—"महाराज, भिक्षु निगरोध आपके दर्शन करना चाहता है। अगर आप उसे कुछ समय दे सकें तो अच्छा है। हो सकता है, उससे बात करके आपको कुछ शांति मिले।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अशोक निगरोध का नाम सुनते ही जैसे चौंक उठा। उसने पूछा—"कौन निगरोध? क्या सुशीम का लड़का? हां-हां, मैं उससे जरूर मिलूंगा।"

निगरोध को आखिरकार सम्राट से भेंट करने का मौका मिला। निगरोध ने कोमल और साफ शब्दों में अशोक को बताया कि तुमने झूठी इज्जत के फेर में पड़कर यह हत्याकांड किया है। भगवान बुद्ध ने संसार को दुखमय जानकर प्राणिमात्र के प्रति करुणा का बर्ताव करने का संदेश दिया है। जो लोग इस संदेश को जानते हैं, वे इस तरह की झूठी इज्जत के फेर में कभी नहीं पड़ते।

अशोक को निगरोध की बातों से शांति मिली। उसने उसके गुरु आचार्य उपगुप्त से भेंट करने की इच्छा प्रकट की। निगरोध तो इसके लिए तैयार ही था। वह अशोक को बड़ी खुशी से आचार्य उपगुप्त के पास ले गया।

आचार्य उपगुप्त की शांतिमय मुद्रा देखकर अशोक एकदम कातर हो उठा। उसने आचार्य से कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आचार्य, मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। मेरा उद्धार करें। मैं आपकी शरण हूं।"

आचार्य ने अमृत-भरे शब्दों में कहा—"सब जीवों पर करुणा करो, सम्राट। करुणा के आंसुओं से पश्चा-ताप की आग बुझ जायगी। मेरी शरण में क्यों आते हो, बुद्ध की शरण में आओ। धर्म की शरण में आओ। संघ की शरण में आओ—

बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि"

अशोक को जैसे रास्ता मिल गया। उसने हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की—"आचार्य, मैं आज से हथियार नहीं उठाऊंगा। जीवन-भर धर्म और करुणा का प्रचार करूंगा। जो विजय हथियारों की मदद से हरगिज नहीं मिल सकती, वह मैं धर्म की मदद से करके दिखा दूंगा। अब मेरी विजय धर्म-विजय होगी। मेरा राज्य धर्म का राज्य होगा। मेरे महामात्र धर्म-महामात्र होंगे। आज से धर्म ही मेरा सब-कुछ होगा। आप मुझे धर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की दीक्षा दें।"

अशोक ने कहा—"आप मुझे धर्म की दीक्षा दें।"

उपगुप्त ने अशोक को दीक्षा देना स्वीकार कर लिया। वह उसे लेकर धर्म-यात्रा पर निकले। साथ में अशोक की विशाल सेना भी थी। ईसा से २६० साल पहले यह महान यात्रा हुई थी। इसमें आचार्य उपगुप्त अशोक को खास-खास बौद्ध-तीर्थों में ले गए—लुंबिनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वन, जहां बुद्ध जन्मे थे; कपिलवस्तु जहां उन्होंने संसार से मुंह मोड़ा था; गया का बोधि वृक्ष, जहां उन्हें बुद्धत्व मिला था; सारनाथ, जहां उन्होंने पहले-पहल उपदेश दिया था; कुशीनगर जहां उनका महापरिनिर्वाण हुआ था और श्रावस्ती, जहां उन्होंने अपनी जिंदगी का अधिकांश समय बिताया था।

इस यात्रा से सारे देश में एक नई जाग्रति फैल गई। जनता के मन में युद्ध और खून-खराबी के लिए कोई जगह नहीं रह गई और लोगों का झुकाव धर्म की तरफ हो गया।

वीर की प्रतिज्ञा कभी झूठी नहीं होती। अशोक ने जो प्रतिज्ञा की, उसे पूरा करके दिखा दिया। उसने अपनी सारी ताकत सबके भले के लिए खर्च करनी शुरू की। बौद्ध-धर्म भारत के बाहर भी फैलने लगा और सारा देश एक धर्म-राज्य के रूप में बदल गया। उसने सड़कें बनवाईं, बाग लगवाये, तालाब बनवाये, कुएं खुदवाये, औषधालय बनवाये। दूर-दूर से दवाओं के पेड़ मंगाकर लगवाये और धर्म के प्रचार के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न जाने कितने विहार, चैत्य, स्तूप आदि बनवाये। शिलाओं और स्तंभों पर उसने अपने धर्म-लेख लिखा-कर देश भर में गड़वा दिये।

इस प्रकार जो पिता का प्यारा नहीं था, वह जनता का प्यारा होकर देवताओं का प्यारा बना। दसों दिशाओं में देवानांप्रिय प्रियदर्शी अशोक की जय-जयकार गूंज उठी।

: ३ :

अशोक का यह नया मोड़ संसार के इतिहास की एक निराली घटना है। अगर मानव के इतिहास की किसी एक अकेली घटना को सबसे महत्वपूर्ण कहना हो, तो वह शायद यही घटना होगी। इस घटना ने अशोक को संसार का सबसे महान राजा बना दिया। अशोक ने इतिहास के उस युग में राज-काज में अहिंसा का प्रयोग किया, जब कोई इसकी बात भी नहीं सोच सकता था। संसार के बड़े-से-बड़े राष्ट्र आज भी इस अर्थ में अशोक से पीछे हैं।

धर्म का प्रचार करने के लिए अशोक ने कुछ उठा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रखा। उसने स्वयं अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को सिंहल, जिसे आजकल लंका कहते हैं, धर्म-प्रचार करने के लिए भेजा। उसने स्वयं अपने हाथों से बोधि-वृक्ष की एक शाखा तोड़कर सिंहल में भेजी। वह शाखा पनपकर विशाल वृक्ष बनी, जो आज भी सिंहल में मौजूद है।

आजादी मिलने के बाद हमारे देश की सरकार ने न केवल अशोक द्वारा बनवाई सिंह-मूर्तियों को अपने राजकीय चिह्न के रूप में माना, बल्कि उसकी अहिंसक राजनीति को भी अपनाया।

बौद्ध-धर्म ग्रहण कर लेने के बाद का अशोक का जीवन सेवा का जीवन रहा। परंतु दुर्भाग्यवश उसके जीवन में एक ऐसी घटना घटी, जिसने उसके अंत समय को अवश्य ही दुख से भर दिया होगा।

अशोक की रानी पद्मावती का पुत्र कुणाल बहुत ही सुंदर था। उसकी आंखें हिमालय के कुणाल पक्षी के समान सुंदर थीं। अशोक की सबसे छोटी रानी तिष्यरक्षिता उसके रूप पर मुग्ध थी, परंतु कुणाल ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने मन में सदैव विमाता के लिए पूज्य भाव ही रखा। तिष्यरक्षिता को इसमें अपना अपमान जान पड़ा। उसने बदला लेने की ठानी।

एक बार, जब अशोक बीमार था तब, तिष्यरक्षिता ने उसकी सेवा करके उससे राजकीय मुहर मांग ली। फिर उसने एक जाली फरमान तैयार करवाया और उसपर वह मुहर लगाकर तक्षशिला भिजवा दिया। फरमान में कुणाल की आंखें निकाल लेने की आज्ञा थी। सेवक इस आज्ञा का पालन करने में हिचकिचाये, परंतु कुणाल पिता का भक्त था। उसने अपना धर्म समझकर अपनी आंखें निकलवा डालीं। जब अशोक को यह मालूम हुआ, तब उसे बहुत ही दुख हुआ। उसने तिष्यरक्षिता को जिंदा जलवा दिया।

पुत्र की आंखें निकल जाने का शोक, अहिंसा के प्रण के बावजूद तिष्यरक्षिता को जिंदा जलवाने का दुख और तिष्यरक्षिता के नीच व्यवहार की शर्म; इन सब बातों ने अशोक को बहुत दुखी किया होगा।

परंतु महापुरुषों के जो महान काम होते हैं, वे ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रह जाते हैं। उन्हींके कारण देश-देश में, युग-युग में उनकी पूजा होती है और इस प्रकार की घटनाएं उनकी कीर्ति को कलंकित नहीं कर पातीं।

: ४ :

अशोक के उपदेश आज भी हमें रास्ता दिखाते हैं। पद्य-रूप में अशोक के कुछ उपदेश नीचे दिये गये हैं :

सुनो, देवताओं के प्यारे प्रियदर्शी की वाणी,
लिखी हुई मिलती है हमको जो, जनमन कल्याणी।
मानो उत्तम धर्म, कष्ट सहने को रहो तैयार,
करो दुखी की सेवा हरदम और सभी को प्यार।
हिम्मत हारो नहीं तभी तो तुम सुख पा सकते हो,
और तभी तो तुम अपना परलोक बना सकते हो।
यही धर्म है मेरा सबको मैंने जिसे बताया,
जिसने सुना उसे बस इस पथ पर ही चलना भाया।
मेरे सब अधिकारी-जन को है मेरा आदेश,
जन-जन के मन तक पहुंचायें वे मेरा संदेश।
तब तो जग के चंचल प्राणी अच्छी राह चलेंगे,
और तभी तो न्याय, शांति, सुख सबको यहां मिलेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहते हैं प्रियदर्शी राजा—धर्म श्रेष्ठ है भाई,
धर्म यही है—-बुरा न बनना, करना सदा भलाई ।
दया करो, दो दान हमेशा, छोड़ो नहीं सचाई,
और काम करने में हरदम बनी रहे शुचिताई ।
इसीलिए तो मैंने जलचर-थलचर-नभचर नाना,
सबकी रक्षा करने का है महाकठिन प्रण ठाना ।
सड़क बनाईं, बाग लगाये, ताल-कुएं खुदवाये,
ठौर-ठौर पर मैंने अपने धर्म-लेख लिखवाये ।
मैं न रहूंगा तो भी सदियों बने रहेंगे पत्थर,
और पढ़ेंगे लोग खुदे जो धर्म-लेख हैं उनपर।
जो कोई इन अच्छी बातों को जाने-मानेगा,
वह प्रति पल सेवा करने का पावन व्रत ठानेगा।

× × ×

देवों के प्यारे प्रियदर्शी राजा यह कहते हैं,
सदा लोग अपनी बड़ाइयां ही करते रहते हैं ।
कौन पाप कब किया कभी यह नहीं सोचता कोई,
हाय हाय सबकी मति कैसी चुप्पी मारे सोई !
माना अपना पाप देखना बहुत कठिन है भाई,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो भी हमको सदा चाहिए करनी दूर बुराई ।
हम न घमंडी या कठोर या क्रोधी या निर्दय हों,
हम विनीत सुस्थिर कृपालु हों और सदैव सदय हों।
जलें नहीं हम देख किसीको बढ़ता जाता आगे,
हमें खुशी हो देख किसीके भाग्य देवता जागे।
क्योंकि इसी दुनिया में हमको नहीं सदा पलना है,
प्रतिपल अच्छे बनें, हमें तो स्वर्ग लोक चलना है।

× × ×

प्रियदर्शी राजा ने है यह धर्म-लेख लिखवाया,
मैंने तो जनता की सेवा में हरदम सुख पाया ।
मेरे बड़े राज्य में जो हैं बड़े-बड़े अधिकारी,
दे डाली हैं उनको मैंने राज-शक्तियां भारी ।
न्याय करें वे, उचित दंड हरदम पाये अपराधी,
लेकिन सुख भी बढ़ें, नहीं तो उनकी सेवा आधी ।
राज-धर्म वे अपने जीवन में सब भांति जमायें,
और इस तरह लोक-रंजनाकर परलोक बनायें ।
कुशल धाय को जैसे माता पुत्र सौंप देती है,
और सोच यह अपने मन में प्रमुदित हो लेती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाल बड़े ही सुख से इसकी गोदी में खेलेगा,
पुष्ट बनेगा और बड़ा हो बड़े काम झेलेगा।
उसी तरह ये जो हैं मेरे सकल कुशल अधिकारी,
दे अधिकार इन्हें है मैंने सौंपी जनता प्यारी।
क्योंकि जानता हूं मैं जब ये मन में नहीं डरेंगे,
तो जनता के हित के कामों को ही सदा करेंगे।
अब से जब भी जो कोई भी सजा मौत की पाये,
यह आज्ञा है—उसे तीन दिन की मुहलत दी जाये।
क्योंकि चाहता हूं मैं वह साधन-आराधन करले,
धर्माचरण करे, मरने के पहले तनिक सुधर ले।

× × ×

देवों के प्यारे प्रियदर्शी राजा ने मन भाये,
छब्बीस वर्ष राज्य करके ये धर्म-लेख खुदवाये।
नहीं जीव-हत्या इस मेरे धर्म-राज्य में होगी,
पशु-पक्षी तक नहीं यहां पर होंगे स्वप्न-वियोगी।
तोता, मैना, लाल, हंस, चकवा, गेलाट, चमगापर,
रानी कीड़ी और पहाड़ी कछुआ, दंडी, तीतर;
गंगा कुक्कुट, बारहसिंघा, हिरन, सफेद कबूतर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नील गाय, मछली, साही, औ सांड़, गिलहरी, बंदर;
कितने सुंदर हम जैसे ये हैं, भगवान-बनाये,
निरपराध ये जीव बिचारे, इन्हें न मारा जाये।
हमें चाहिए जीवन ही के लिए सदा कुछ करना
अरे तुच्छ है जीव मारकर पेट जीव का भरना।

× × ×

प्रियदर्शी राजा ने जबसे राज-पाट है पाया,
तबसे बारह वर्ष बाद यह धर्म-लेख खुदवाया।
गप-शप में ही लोग न अपना जीवन व्यर्थ गंवायें,
उन्हें चाहिए कोशिश करके वे सद्धर्म बढ़ायें।
मैं तो दूर-पास का अंतर कभी न मन में लाया,
नहीं मानता हूं मैं कुछ भी अपना और पराया।
सदा चाहता हूं मैं अपनों को जो सुख पहुंचाऊं,
दूर दूसरों की खातिर भी वह सब-कुछ कर पाऊं।
किसी क्षेत्र में लगता मुझको कभी न कोई दूजा,
सभी संप्रदायों की मैंने की है हरदम पूजा।
सबको आदरणीय सदा ही से मैंने माना है,
इसी भावना में स्वधर्म को मैंने पहचाना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# धरती की कहानी

: १ :

## धरती से परिचय

धरती माता की सभी देशों में हमेशा से पूजा होती आई है। बहुत-से लोगों ने इसके गीत गाये हैं। इसके बारे में अधिक-से-अधिक जानने की कोशिश लोग पुराने जमाने से करते रहें हैं। आज से पांच लाख साल पहले सबसे पहले आदमी ने किसी पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर आसमान की ओर देखा होगा। सूरज की चमक और उसकी रोशनी की तेजी से वह घबराया होगा। उसने रात में चांद को और उसकी ठंडी किरणों को पहाड़ी से बहते हुए किसी झरने से अठखेलियां करते देखा होगा। झिलमिल करते हुए तारे आकाश में दीखे होंगे। शायद तभी कहीं से एक बादल का टुकड़ा वहां आया होगा, जिसने चांद और तारों को अपने आंचल से ढक लिया होगा। ऐसी घटनाओं को देख-देखकर आदमी हैरान हुआ होगा कि आखिर यह सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है क्या ? उसी समय उसके मन में धरती और आकाश को जानने की इच्छा पैदा हुई होगी ।

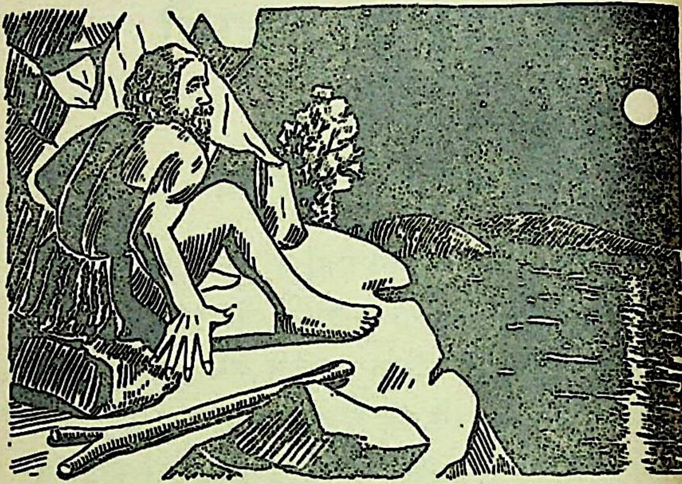

आसमान को निहारता हुआ पुराने जमाने का आदमी

तबसे लेकर आजतक आदमी दुनिया और धरती के बारे में खोज करता आया है, तरह-तरह के अनुमान लगाता आया है । जिस तेजी से आदमी आगे बढ़ा है, उसी तेजी से उसकी सूझ-बूझ भी बढ़ी है और उसी हिसाब से धरती के बारे में जानकारी भी ।

सबसे पहले आदमी ने धरती के ऊपर की चीजों को देखा था—सपाट मैदान, उनमें दौड़ती हुई नदियां, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और उनकी गहरी-गहरी घाटियां ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनको देखकर वह इसी नतीजे पर पहुंचा था कि यह धरती चपटी है और अचल है। देश-देश की गाथाओं से पता चलता है कि संसार के हर देश में धरती को चपटी माना जाता था। भारत के धर्म-ग्रंथों में बताया गया है कि धरती गाय के सींग, शेषनाग के फन और वाराह के दांतों पर टिकी हुई है। यूनान के धर्म-ग्रंथों में उसे एक पहलवान के हाथों पर टिका माना जाता है। हमारे देश में एक बहुत बड़े विद्वान हुए हैं---भास्कराचार्य। उनको तारों के बारे में बड़ी जानकारी थी। सबसे पहले उन्होंने ही बताया कि धरती गोल है। यूरोप के दो पुराने विद्वानों ने भी धरती को गोल माना था। उन विद्वानों ने अपनी बात की सचाई में जो सबूत पेश किये, वे ही आज भी दिये जाते हैं। लेकिन उस समय आज की तरह बड़ी-बड़ी चीजों को खोजने और नापने के साधन नहीं थे। धीरे-धीरे आदमी को दिन और मौसम का पता चला। बादलों की गड़गड़ाहट, बिजली की चमक, तूफान और आंधियों से उसकी जान-पहचान हुई और इनको वह दुनिया से ऊपर की चीजें मानने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: २ :

# धरती की उमर

आदमी शुरू-शुरू में जंगली था। धीरे-धीरे वह सभ्य बना। अपनी रोज की जरूरतों से आगे बढ़कर उसने सोचना शुरू किया। धरती, सूरज और आकाश के तारों का भेद जानने की कोशिश की। इसी समय यह जानने का प्रयत्न किया गया कि धरती की उमर कितनी है। बेबीलोन के कुछ लेखकों ने उसकी उमर पांच लाख साल की आंकी। ईरानियों ने बताया कि वह कुल बारह हजार साल पुरानी है। हमारे देश में भी कई तरह के अंदाजे लगाये गए। मनु महाराज ने उसे चार अरब बत्तीस करोड़ साल की माना। आजकल भी कुछ ऐसा अंदाज किया जाता है।

धरती की खोज का यह काम और आगे नहीं बढ़ सका। डेढ़ हजार साल तक आदमी अपनी इन खोजों को भूला-सा रहा। १५वीं सदी में कुछ वैज्ञानिक पैदा हुए।

उन्होंने इस काम को आगे बढ़ाया। १९वीं सदी में और खोजें हुईं और लोगों ने पता लगाया कि धरती के भीतर क्या-क्या चीजें हैं। धरती के ऊपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी चट्टानें मिलीं, जिनको समय और हवा के थपेड़ों ने नुकीला बना दिया था। इन लोगों ने ऐसी चट्टानें भी देखीं, जिनको नदियों और झरनों के तेज बहाव ने काट दिया था। इन चट्टानों की तली में तरह-तरह के जीवों की ठठरियां पाई गईं। यह भी देखा गया कि चट्टानों की एक परत में मिलीं ठठरियां दूसरी परत की ठठरियों से अलग थीं। इसका मतलब यह निकाला गया कि एक परत से नीचे की परत में मिलनेवाली ठठरियां ज्यादा पुरानी थीं।

इस तरह धरती के अलग-अलग युगों का पता लगाया गया। चट्टानों की तली और उनमें पाये जानेवाली जीवों की ठठरियों में एक रिश्ता कायम किया गया और इससे धरती की उमर का अंदाज लगाया गया।

उमर मालूम करने में एक कठिनाई का सामना करना पड़ा। वह यह कि कौन-सी चट्टान को धरती के पैदा होने के समय का माना जाय? धरती और चट्टानों का पुराना इतिहास समय-समय पर होनेवाली जल-प्रलयों ने खतम कर डाला था। बरफ के तूफानों ने धरती और चट्टानों को तोड़ा-फोड़ा, ज्वालामुखी पहाड़ों से निकले लावे ने उनको बरबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया और बारिश और पाले ने उनको तड़काया।

उन्नीसवीं सदी में कुछ नई धातुओं को खोज निकाला गया। इन धातुओं से ऐसी किरणें निकलती हैं, जिनको आंखों से देखा नहीं जा सकता, पर जिनका असर बहुत गहरा होता है। इनसे निकली किरणें आदमी के शरीर पर जहां पड़ती हैं, वहां गहरा घाव कर देती हैं। यह घाव कभी नहीं भरता। ये धातुएं पुरानी चट्टानों में भी पाई जाती हैं। समय बीतने के साथ-साथ ये धातुएं दूसरी धातुओं में बदल जाती हैं और आखिर में सीसा बन जाती हैं। अगर एक खास समय के लिए इन धातुओं में से किसीको योंही रख दिया जाय तो यह सारी-की-सारी सीसे में बदल जाती हैं। यूरेनियम इस तरह की धातुओं में से एक है। अगर चौबीस हजार मन यूरेनियम को एक साल तक अछूता रखा रहने दिया जाय तो उसमें एक रत्ती सीसा बन जाता है। अगर सवा इकतीस सेर यूरेनियम धातु को दस करोड़ साल तक अछूता रहने दिया जाय तो इसमें से साढ़े छः छटांक यूरेनियम पूरी तरह सीसे में बदल जायगी। एक अरब साल में सोलह सेर यूरेनियम पूरी तरह से सीसा बन जायगी।

यूरेनियम के सीसे में बदलने का यह क्रम एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खास नियम के हिसाब से होता है और इस नियम पर बाहर की बातों का कोई असर नहीं पड़ता। अक्सर पुरानी चट्टानों में यूरेनियम तथा उससे बना हुआ सीसा साथ-साथ मिलते हैं। इन चट्टानों में मौजूद यूरेनियम और सीसे की तादाद को अलग-अलग मालूम किया जा सकता है। इससे यह पता लगाया जा सकता है कि यूरेनियम से सीसा बनने में कितने दिन लगे। इस तरह चट्टान की उमर मालूम की जा सकती है। दक्षिण अफ्रीका में ऐसी चट्टान पाई गई हैं, जो ढाई अरब साल पुरानी है। इससे अधिक पुरानी दूसरी और कोई चट्टान अभी तक नहीं मिली है। इससे यह अंदाज लगाया गया है कि धरती शायद तीन अरब साल पुरानी है।

धरती से रोज लाखों मन नमक नदियों के पानी में घुलकर सागर में गिरता है। पानी भाप बनकर बादल बन जाता है। लेकिन नमक सागर में ही पड़ा रह जाता है। इस तरह सागर में नमक की मात्रा बराबर बढ़ती रहती है। सागर में कुल कितना नमक है और वह कितने दिनों में इकट्ठा हुआ है, इससे भी धरती की उमर मालूम की गई है। इनके अलावा और भी कुछ तरीके काम में लाये गए हैं। इन सबसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह अंदाज लगाया गया है कि धरती तीन से पांच अरब साल पुरानी है।

: ३ :

## धरती-माता का अनोखापन

आकाश में जितने तारे हैं, उनमें कुछ तो बहुत गरम हैं, कुछ बहुत ठंडे। कुछ तारों में उबलते पानी की गरमी से एक लाख गुना गरमी पाई जाती है और कुछ में बरफ से भी ढाई सौ गुनी ठंडक होती है। धरती के अलावा बाकी सभी तारों में ऐसी गैस मिलती है, जो आग के पास आने पर फौरन जल उठती है। सभी तारों में ठोस और पानी जैसे बहनेवाले पदार्थ नहीं पाये जाते।

धरती सूरज के परिवार (सौर-परिवार) का एक ग्रह है। सौर-परिवार में बहुत-से ग्रह हैं। इनमें से बुध ग्रह सूरज के सबसे पास है। इसीलिए वह बहुत गरम है। इसमें इतनी गरमी है, जिसकी वजह से इसके भीतर की सभी गैस बाहर निकल गई है। इसमें किसी तरह की हवा नहीं है। बिना हवा के जानदार प्राणी और पेड़-पौधे जिंदा नहीं रह सकते। इसलिए वहांपर न पेड़ हैं और न पौधे हैं। कोई जानदार जीव भी वहांपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं बसता । बुध के बाद दूसरा ग्रह शुक्र है। वह सूरज से और भी दूर है। देखने में धरती जैसा लगता है। लेकिन वह भी काफी गरम है। इसमें हवा तो है, पर वह गैस मौजूद नहीं है, जो सांस लेने के लिए सबसे जरूरी होती है। इस गैस को आक्सीजन कहते हैं। इस वजह से शुक्र में भी जानदार प्राणी, पेड़ और पौधे नहीं पाये जाते। इसके बाद धरती आती है। वह भी दूसरे ग्रहों की तरह एक ग्रह है। यह सूरज से और भी ज्यादा दूर है।

जानदार प्राणियों के लिए जरूरी है कि उनके चारों ओर हवा हो। इस हवा में आक्सीजन का होना भी जरूरी है ताकि वे सांस ले सकें। पेड़ और पौधे सांस लेने के लिए एक दूसरी गैस इस्तेमाल करते हैं। इस गैस को कारबन डाई ऑक्साइड गैस कहते हैं। कोयलों को जलाने से जो धुआं निकलता है, उसमें भी यह गैस होती है। आदमी का शरीर ठीक काम करता रहे, इसके लिए पानी और गरमी की जरूरत पड़ती है। ये सारी बातें धरती पर पाई जाती हैं। यहांपर हवा भी है, जानदार प्राणियों और पेड़-पौधों को सांस लेने के लिए इस हवा में वे गैसें भी मौजूद हैं। पानी भी है और गरमी भी है। इसलिए यहांपर जानदार प्राणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रौर पेड़-पौधे पाये जाते हैं। सारे तारों ग्रौर ग्रहों में धरती ही एक ग्रकेला ऐसा ग्रह है, जहांपर जानदार जीव बसते हैं। ठोस ग्रौर तरल पदार्थ भी सिर्फ धरती पर ही पाये जाते हैं।

मंगल धरती के मुकाबले में सूरज से बहुत दूर है। इसीलिए वहांपर ठंड काफी पड़ती है। वहांपर हवा पाई जाती है, पर वह धरती की हवा से पतली ग्रौर कम है। कुछ लोगों का कहना है कि मंगल में हरियाली ग्रौर प्राणी भी हैं।

: ४ :

## धरती कैसे बनी ?

धरती कैसे बनी, इसके बारे में अलग-ग्रलग राये हैं। लेकिन ग्राजकल जिस राय को सब मानते हैं वह यह है कि सारा संसार शुरू में एक तरह के धूल-कणों या जर्रों से भरा हुग्रा था। इन धूल-कणों के साथ-साथ कुछ पतले बादल भी थे। इन धूल-कणों ग्रौर बादलों से ही ब्रह्मांड के सारे तारे बने। तारों के बनने से पहले ये धूल-कण ग्रौर बादल बिना किसी नियम के इधर-उधर डोलते थे, लेकिन इनमें एक ग्रापसी खिंचाव था। इस ग्रापसी खिंचाव की वजह से ये धीरे-धीरे पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आने लगे। पास आकर आपस में मिलने लगे और मिलकर बढ़ने लगे। खिचाव और पास आने की वजह से धूल-कणों और बादलों का फैलाव कम हुआ और इनमें कुछ सिकुड़न आई। धीरे-धीरे इनका एक रूप बना और ये अपनी धुरी पर नाचने लगे। इसकी वजह आपस का खिचाव ही था। धूल-कणों और बादलों के झुंडों ने जब ऐसा रूप धारण कर लिया तो उनके अन्दर की गरमी और दबाव बढ़ने लगा। यह सिलसिला बहुत समय तक चलता रहा। इससे बहुत गरमी और दबाव पैदा हो गया। बहुत गरमी की वजह से ये सफेदी लेकर चमकने लगे—जैसे लोहे को बहुत गरम करने पर वह सफेद होकर चमकने लगता है। धीरे-धीरे इनमें गरमी बढ़ने लगी, जिससे ये और भी सफेद हो गये। इनसे गरमी रोशनी की किरणों के रूप में निकलने लगी। इस तरह धूल-कणों और बादलों से सितारे पैदा हुए और वे आसमान में झिलमिलाने लगे।

अपनी-अपनी धुरी पर टिके हुए तारे बिना किसी नियम के घूम रहे थे। इस बेतरतीबी से घूमने में कुछ तारे धीरे-धीरे टूटकर दो टुकड़े हो गये। इस प्रकार तारों की संख्या बढ़ी। कुछ तारों के तीन, चार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और पांच टुकड़े भी हो गये। ये टुकड़े कुछ समय बाद तारे बन गये। इस तरह तारों की दुनिया बढ़ती रही।

कभी धूल-कण और बादलों के फैलाव और दबाव के वजन के कारण ऐसा भी हुआ कि इनके बहुत सारे झुंड टुकड़ों में न टूटकर एक जगह पर इकट्ठे हो गये। हमारा सूरज इसी तरह के बादलों और धूल-कणों से बना है।

सूरज अपने बचपन में था। यह चारों ओर बादलों और गैसों से घिरा था और इनके बीच में यह बराबर घूम रहा था। चारों ओर घिरे बादल और गैसें भी घूम रही थीं। घूमते-घूमते इन बादलों और गैसों का एक तश्तरी जैसा रूप बन गया। यही तश्तरी बाद में सूरज-मंडल का घेरा बनी। यह तश्तरी घुमते-घुमते चपटी हो गई। इसके अन्दर धूल-कणों और बादलों का आपस का खिचाव काम कर रहा था। इस खिचाव के कारण तश्तरी का फैलाव कम होने लगा और वह भारी होने लगी। इसके भीतर की गैसें एक-दूसरे से मिलकर सघन होने लगीं और बड़े-बड़े टुकड़ों के रूप में जमा होने लगीं। घूमते हुए सूरज और तश्तरी की वजह से तश्तरी के अन्दर के ये टुकड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी घूमने लगे। इनकी चाल तेज होने लगी और ये आपस में टकराकर मिलने और अलग होने लगे। मिलने से ये टुकड़े बड़े और बोझीले हो गये और धीरे-धीरे वे तश्तरी से बाहर की ओर अलग होने लगे। कोई दस करोड़ साल तक यह सबकुछ होता रहा। धीरे-धीरे सारे टुकड़े सुडौल होगये। इनके अंदर की गैसें पानी-जैसे बहनेवाले तरल और ठोस पदार्थों में बदलने लगीं। यह ठीक उसी तरह हुआ जैसे ठंडी करने पर पहले भाप का पानी बन जाता है और फिर पानी से बरफ बन जाता है। इनमें से बड़े सुडौल टुकड़े मंगल, शुक्र, बुध और धरती जैसे ग्रह बन गये। इन ग्रहों की संख्या नौ है। छोटे टुकड़े चांद-जैसे उपग्रह बन गये। सौर-परिवार में उपग्रहों की तादाद बहुत अधिक है। अपने जन्म से ही ये ग्रह और उपग्रह अपनी धुरी पर नाचते हैं और सूरज के चारों ओर फेरी लगाते हैं।

इसी तरह के एक सुडौल टुकड़े से धरती बनी। वह अपनी धुरी पर नाचती रही और सूरज की फेरी भी लगाती रही। अपनी धुरी पर पूरा चक्कर लगाने में धरती को चौबीस घंटे लगते हैं। इसलिए चौबीस घंटे का दिन-रात माना जाता है। सूरज के चारों ओर फेरी लगाने में धरती को तीनसौ पैंसठ दिन लगते हैं, इस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए इसको एक साल कहा जाता है। धरती के पैदा होने से कुछ दिनों बाद उसके बादलों और धूल-कणों में एक बड़ी भारी उथल-पुथल हुई। एक तूफान उठा और इस तूफान ने धरती के छोटे-छोटे टुकड़ों को आपस में मिलने का मौका दिया। ये आपस में मिले और मिलकर इन्होंने एक बड़े टुकड़े का रूप धारण कर लिया। यह बड़ा टुकड़ा घूमती हुई धरती से कुछ समय बाद अलग हो गया और धरती के चारों-ओर फेरी लगाने लगा। इसी टुकड़े को हम चांद कहते हैं। शुरू में धरती का गोला धूल-कणों और सूरज के बादलों से टकरा-टकराकर अपना रास्ता ढूंढ़ रहा था। धरती के बादलों और धूल-कणों के साथ टकराने से एक रगड़ पैदा होती थी, जिससे चिनगारियां निकलती थीं। बहुत बड़ी धरती और बहुत बादलों से निकली ये चिनगारियां भी बहुत होती थीं। इनसे इतनी गरमी पैदा हुई कि धरती उसी तरह चमकने लगी जिस तरह लोहा खूब गरम होने पर सफेद चमकने लगता है।

धरती के भीतर भी फेर-बदल हो रहे थे। इसके अंदर की गैसें ठंडी होकर पानी जैसी हालत में आ-गई थीं। उसी तरह जैसे भाप ठंडी होकर पानी बन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती है; लेकिन फिर भी धरती के अंदर इतनी गरमी थी कि लोहा और पथरीली चट्टानें सभी पिघली हालत में थे। ऐसी दशा में बोझीली चीजें धरती की नाभि की ओर जा रही थीं और कम भारी चीजें तैरकर ऊपर आ रही थीं। पिघला हुआ लोहा सबसे भारी था, इसलिए यह धरती की नाभि के चारों ओर इकट्ठा हो रहा था। ओलीवीन नाम का खनिज लोहे से कम भारी था। लेकिन यह भी पिघली हालत में था, इसलिए यह पिघले लोहे के ऊपर तैर रहा था। धरती पर पाये जानेवाले बाकी पदार्थ ओलीवीन खनिज के ऊपर थे। धरती के चारों ओर भाप और दूसरी गैसें जमा होने लगीं। इन गैसों से ही धरती का शुरू का वायुमंडल बना।

धरती ठंडी होने लगी। ऊपर की पिघली चट्टानों को ठोस बनने में कुछ हजार या लाख साल लगे। यह भी मुमकिन है कि उस समय धरती की ऐसी हालत हो, जैसे मिसरी बनते समय खांड की चाशनी की होती है। चाशनी पिघली हालत में होती है और उसमें रवे बनते जाते हैं। शायद इसी तरह धरती के भीतर ओलीवीन खनिज रवे बनकर ठोस बन गया होगा और धरती की नाभि के चारों ओर का पिघला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोहा पिघली हालत में ही रहा होगा। उस समय से अबतक इस पिघले लोहे ने धरती की नाभि को चारों ओर से घेरा हुआ है। इस लोहे की गरमी को बाहर निकलने का कोई मौक़ा नहीं मिला है। इसलिए आज भी वह पिघली हालत में है।

उस समय धरती के भीतर की हालत अजीब थी। धरती की नाभि के चारों ओर चार-चार हजार मील तक पिघला लोहा फैला हुआ था। इस पिघले लोहे में ओलीवीन खनिज तैर रहा था। इसके ऊपर की परत में खनिज और झीने हरे काले रंग की पथरीली चट्टानें थीं। ये चट्टानें आधा पिघली और आधा ठोस हालत में तैरती-उतराती इधर-उधर घूम रही थीं। सबसे पहले पथरीली चट्टानें ठंडी हुईं और धरती की सबसे ऊपर की पपड़ी के रूप में जमने लगीं।

: ५ :

# धरती की भीतरी हालत

धरती के भीतर से पेट्रोल, कोयला और खनिज निकाले जाते हैं। इसके लिए कुएं और खानें खोदी जाती हैं। इनसे कुछ ऐसे सबूत मिले हैं जिनसे यह कहा जा सकता है कि धरती के पैदा होने और उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनने की सारी कहानी हमारे पैरों के नीचे दबी पड़ी है। धरती के भीतर काफी गहराई तक कुएं, खानें खोदी गई हैं। धरती से पेट्रोल निकालने का कुआं सबसे गहरा होता है। इसकी गहराई लगभग चार मील तक होती है। आदमी धरती के भीतर इससे ज्यादा नहीं जा सका है। लेकिन धरती की नाभि के मुकाबले में यह चार मील की गहराई कुछ भी नहीं है। धरती की नाभि ऊपर की सतह से चार हजार मील भीतर है। आदमी अभी तक इस गहराई के सिर्फ एक हजारवें भाग तक ही जा पाया है। खोदी गई खानों और कुओं से धरती के भीतर की गरमी का अदांज लगाया गया है। इनसे पता चला है कि धरती के अंदर दो मील नीचे जाने पर इतनी गरमी हो जाती है कि वहांपर पानी उबलने लगता है। अन्दाजा लगाया गया है कि धरती के भीतर तीस मील जाने पर गरमी इतनी बढ़ जाती है कि पत्थर और चट्टानें भी पिघलने लगती हैं। यहीं पर ज्वालामुखियों के मुंह से निकलनेवाला लावा बनता है। यहां यह लावा पिघली हालत में होता है। धरती के अन्दर की ठोस तहों में दरारें पड़ी होती हैं। पिघला लावा इन दरारों में घुस जाता है और बराबर कोशिश करता है कि वह धरती के ऊपर आ जाय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह धरती की ऊपरी तह के पास आकर जमा होता रहता है। जब लावा बहुत जमा हो जाता है तो उसका दबाव भी बहुत बढ़ जाता है। अपने दबाव की वजह से लावा धरती को फाड़कर ऊपर निकल आता है। इसीको ज्वालामुखी का फटना कहते हैं। ३० मील से

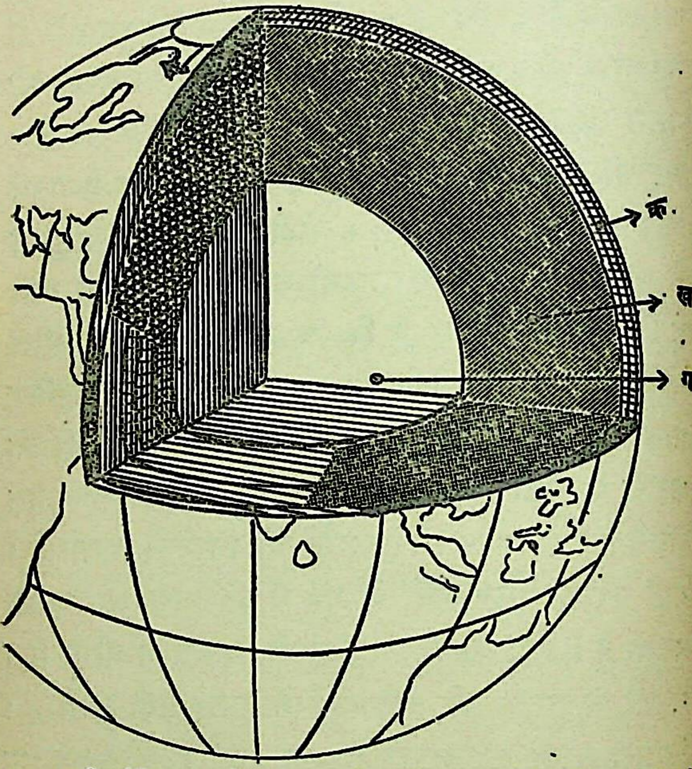


क=नाभि (पिघला लोहा) ख=बीच की परत (ओलीवीन खनिज) ग=धरातल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीचे धरती के अंदर गरमी कम तेजी से बढ़ती है, लेकिन धरती की नाभि के पास जाकर गरमी इतनी हो जाती है, जितनी कि सूरज के अंदर है। इस गरमी पर संसार में पाई जानेवाली कोई चीज भी ठोस पदार्थ के रूप में नहीं रह सकती। लोहा तो इस गरमी के पांचवें हिस्से में ही पिघल जाता है।

पहले कुछ विद्वान यह समझते थे कि धरती अंदर से खोखली है और उसमें जीव रहते है, लेकिन असली बात इससे एकदम उलटी है। धरती गोल है, पर उसका घेरा छोटे-बड़े तीन गोल घेरों में बंटा हुआ है। तीनों का धुरा एक ही है। सबसे ऊपर धरती की जमी हुई सतह है। इस घेरे के नीचे धरती का दूसरा घेरा है। उसके नीचे तीसरा, जिसे हम धरती की नाभि कह सकते हैं। पहले हम इसी नाभि की बात करेंगे। धरती की नाभि पिघले लोहे का एक गोल घेरा है। यह बहुत बड़ा है। यह सारी धरती का चौथाई हिस्सा है और मंगल ग्रह के बराबर है। इस पिघले लोहे पर धरती के बाकी हिस्सों का बहुत भारी दबाव हर समय पड़ता रहता है। इसका अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि इस घेरे में एक इंच लंबे और उतने ही चौड़े टुकड़े पर एक बड़ी मालगाड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बोझ के बराबर दबाव रहता है। पिघले लोहे के घेरे के चारों ओर एक दूसरा बड़ा गोल घेरा है। यह दूसरा घेरा धरती की सतह को छूता हुआ चला गया है। इसकी मोटाई पिघले लोहे के घेरे से आधी है। इस गोल घेरे में ओलीवीन खनिज भरा हुआ है। ओलीवीन खनिज लोहे और मैगनीशियम धातुओं का एक खनिज होता है। इसकी चट्टानों का रंग भूरा हरा होता है। ओलीवीन खनिज के घेरे के चारों ओर तीसरा गोल घेरा है, जिसपर सारे जीव बसते हैं। पेड़ और पौधे उगते हैं। अनाज पैदा होता है। कोयला, लोहा, और दूसरी चीजों को खोदकर निकाला जाता है। इस घेरे में ही सागर हैं। अगर हम धरती का एक सेब से मुकाबला करें तो यह तीसरा गोल घेरा उतना ही मोटा है, जितना कि सेब का ऊपर का छिलका। इसीको हम धरातल कहते हैं। यह इतना पतला होने पर भी कई हिस्सों में बंटा हुआ है। धरातल की सबसे ऊपर की तह सुरमे खनिज की चट्टानों की बनी हुई है। यह तह सागरों की पेंदी तक चली गई है। इसके नीचे भीनी पथरीली चट्टानें हैं। इन का रंग हरा काला-सा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ६ :

# समुद्र कैसे बने ?

जब धरती पिघली हालत में थी तो वह धीरे-धीरे ठंडी हो रही थी और उसका धरातल ऊबड़-खाबड़ था। वह आज जैसा इकसार नहीं हो पाया था। उसको धुएं और लपटों ने चारों ओर से घेरा हुआ था। पिघली चट्टानें धरती के अन्दर से निकलकर धरती के ऊपर झरनों की तरह बह रही थीं। वायुमंडल की हवा इन चट्टानों को ठंडा करने में लगी हुई थी। समय के साथ वे चट्टानें जमती और ठोस होती गईं। धरातल के कुछ हिस्सों के ठोस हो जाने पर सागर बने। इधर चट्टानें कड़ी और ठोस हो रही थीं, दूसरी ओर धरातल के पास की भाप और दूसरी गैसें ठंडे वायुमंडल के बोझीले बादलों से मिल रही थीं। इन बोझीले बादलों की वजह से शुरू से न धरती पर सूरज की किरणें, उसकी रोशनी और गरमी ही आती थी और न पानी ही बरसता था। कभी-कभी ऐसा होता कि इन बोझीले बादलों के सबसे ऊपर के हिस्सों में पानी बरसने लगता। लेकिन धरती के आस-पास की हवा इतनी गरम थी कि बूंदें धरती पर आने से पहले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही भाप बनकर हवा में मिल जाती। ये बोझीले और गहरे बादल सूरज की रोशनी के धरती तक पहुंचने में रुकावट डालते। सूरज की किरणें इन बादलों से टकरातीं, कुछ इनमें ही खो जातीं और कुछको वापस लौटना पड़ता। इस तरह धरती बनने के बाद काफी समय तक उसपर सूरज की रोशनी नहीं पहुंच सकी। धीरे-धीरे धरती के ऊपर की गरमी कम होती जा रही थी। एक समय आया कि धरती के ऊपर इतनी ही गरमी रह गई, जितनी गरमी पर पानी उबलता है, फिर यह गरमी और भी कम हुई और इसके बाद धरती पर पानी भी बरसना शुरू होगया। धरती पर पानी बरसने से धरती अधिक तेजी से ठंडी होने लगी।

बरसों तक धरती पर पानी बरसता रहा। धरती ऊबड़-खाबड़ थी, जिसमें अनगिनत गहराइयां थीं। बारिश का यह पानी धरती की इन शुरू की गहराइयों में जमा होता रहा। पानी से भरी यही गहराइयां आज सागर कहलाती हैं। लेकिन धरती पर अभी भी पानी बराबर बरस ही रहा था और सागरों की ओर उमड़ा चला जा रहा था। जब सागर इस पानी को अपने में न समा सके तो यह पानी सूखी धरती को डुबोने लगा। धीरे-धीरे धरती पर पानी इतना बढ़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया कि पानी ने सारी धरती को अपने में डुबो लिया। इसीको जल-प्रलय कहते हैं। धीरे-धीरे पानी का यह तूफान कम हुआ, धरती साफ होकर चमकने लगी। तबसे ऐसा कई बार हो चुका है।

: ७ :

## पहाड़ कैसे बने ?

धरती धीरे-धीरे ठंडी हो रही थी। पिघली धातुओं और पदार्थों का ऊपर का हिस्सा पपड़ियों के रूप में जमने लगा था और इन जमी पपड़ियों में झूरियां पड़ने लगी थीं। धरती उस जमाने में ठीक एक चुड़े हुए सेब के समान थी। जिस तरह से चुड़े हुए सेब का ऊपर का छिलका तो सिकुड़ जाता है, लेकिन इसके अंदर का गूदा वैसा ही बना रहता है, ठीक इसी तरह से धरती के ऊपर पपड़ियों में झुरियां पड़ गई थीं और वह ठंडी हो रही थी, लेकिन अंदर का हिस्सा पिघला हुआ था और वह उतना ही गरम था जितना कि शुरू में था। धरती के ऊपर पड़ी पपड़ियों की तहें बराबर मोटी और धरती की नाभि से बराबर दूर होती जा रही थीं। कुछ समय के बाद पपड़ी पर पड़ी झुरियां पहाड़ों में बदल गईं। धरती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पेट में से बहुत-से पहाड़ निकलकर ऊपर उठ आये। उस जमाने में बहुत-से पहाड़ बरबाद भी हुए। इनकी बुनियाद आज भी धरती के अंदर मीलों नीचे दबी पड़ी है।

इसी समय धरती पर एक बड़ी उथल-पुथल हुई, जिससे धरती की ऊपर की पपड़ी भड़क उठी। इस घटने-बढ़ने के नाच में कई गहरे सागर और ऊंचे पहाड़ बने। धरती की पपड़ी फूली और फूलने से भूचाल आये। ज्वालामुखियों ने अपना मुंह खोलकर धरती पर आग बरसाई। इसी जमाने में कनाडा में बहुत बड़े-बड़े पहाड़ों का जन्म हुआ। ज्वालामुखी से निकली आग, राख और पिघली चट्टानों पर लावे और राख की दो मील मोटी तह जम गई। कनाडा में यही चट्टानें आजकल सुरमा खनिज के रूप में जगह-जगह मिलती हैं।

आज से कोई छः करोड़ साल पहले एशिया में हिमालय, यूरोप में आल्प्स और दूसरे बड़े-बड़े पहाड़ पैदा हुए। ये सभी पहाड़ एक साथ नहीं बने। कुछ पहले और कुछ बाद में। अमरीका की कैसकंड की पहाड़ियां इनमें सबसे नई हैं। ये पहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ड़ियां आज से कोई दस लाख साल पहले ही सागर से बाहर निकालीं थीं। उसी जमाने में सागरतल से एक बड़े ज्वालामुखी पहाड़ ने अपना मुंह खोलकर आग बरसाई थी। आज भी इसके निशान मिलते हैं। इस ज्वालामुखी पहाड़ से आज भी पिघली राख और लावे का निकलना बंद नहीं हुआ है। शुरू में हिमालय से लेकर यूरोप में आल्प्स तक एक ही पहाड़ था। पर बाद में धरती में तबदीली होने के कारण ये दो पहाड़ बन गये। प्रशांत महासागर में दूर-दूर तक उसकी पेंदी में ज्वालामुखी फैले हुए हैं। ऐसे सबूत मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि हिमालय पहाड़ आज भी बराबर बढ़ रहा है और ऊंचा होता जा रहा है। पहाड़ आज भी बन रहे हैं। धरती पर अबतक इस तरह से कम-से-कम दस बारह पहाड़ बन चुके हैं।

: ८ :

## बरफ का जमाना

आज से बीस लाख साल पहले अफ्रीका का काफी हिस्सा बरफ से ढक गया था। दक्षिणी अमरीका में उन जगहों पर भी बरफ जम गई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहां आजकल बहुत गरमी पड़ती है। पहले-पहल बरफ कैसे और कब बनी, इसके बारे में ठीक पता नहीं है। कुछ विद्वानों की राय है कि जब कभी हवा की बनावट में फेर-बदल हुई होगी और ज्वालामुखी पहाड़ों से राख के बादल ऊपर उठे होंगे तभी कभी बरफ बनी होगी। दूसरे लोगों का कहना है कि धरती पर बरफ के जमाने धरती और सूरज के आपसी रिश्ते में तबदीली से आये होंगे।

आज से दस लाख साल पहले धरती पर बरफ का एक जमाना आया था। उस जमाने में आदमी को धरती पर वानररूपी अपने पूर्वजों से जन्म मिल चुका था। बरफ से धरती का एक-चौथाई भाग ढक गया। इन पिछले दस लाख सालों से वही बरफ का जमाना चालू रहा है। इस बीच में कम-से-कम चार बार बरफ धरती के पहाड़ों पर बढ़ी और कम हुई है। आज से बीस हजार साल पहले धरती पर बरफ फिर बढ़ी थी। आज बरफ का बढ़ना रुक गया है। यह धरती पर धीरे-धीरे कम होती जा रही है। लेकिन इतना होने पर आज भी धरती का इतना हिस्सा बरफ से ढका हुआ है। धरती के दक्षिणी ध्रुव पर एक जमाने में काफी हरियाली थी, लेकिन आज वहां की कई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजार मील जमीन बरफ से ढकी पड़ी है। आज धरती के सभी बड़े-बड़े पहाड़ों की चोटियां बरफ से लदी पड़ी हैं। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि अब आगे बरफ बराबर घटती जायगी। धरती की आबोहवा बीस हजार ईसवी तक बराबर गरम होती जायगी। आज से ४८ हजार साल बाद धरती पर बरफ का एक और जमाना आयेगा। इस जमाने के आने से पहले धरती पर का सारा बरफ गल जायगा और बरफ गलने से नदी और सागरों में काफी पानी बढ़ जायगा। अंदाज किया जाता है कि सारा बरफ गल जाने पर सागरों की सतह का पानी सौ फुट ऊंचा उठ जायगा, इससे सागरों के किनारे पर बसे हुए बड़े-बड़े बन्दरगाह पानी में डूब जायंगे।

× × ×

धरती-जैसे ग्रह ब्रह्मांड में करोड़ों की तादाद में हैं। सौर-परिवार जैसे लाखों परिवार भी इसी ब्रह्मांड में हैं और इस दुनिया जैसी हजारों दुनिया इसमें हैं। धरती तो इनमें सिर्फ बालू के एक कण जैसी है। धरती पर पानी बरसने की चाल इतनी तेज है कि सिर्फ बारिश का पानी ही धरती से दो अरब चौबीस करोड़ मन पदार्थों को बहाकर सागर में ले जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर पानी बरसने की यही रफ्तार रही तो हर साल धरती की दो अरब चौबीस करोड़ मन चीजें सागर में जाकर गिरती रहेंगी। एक वैज्ञानिक का कहना है कि ऐसा उस समय तक होता रहेगा जबतक कि सारे पहाड़ों की ऊंची उठी चोटियां बरसे हुए पानी की चोटों से टूट-टूटकर सागर में न चली जायं। लेकिन इससे धरती पर पहाड़ खत्म नहीं हो जायंगे। जैसा कि अबतक होता रहा है, नये पहाड़ फिर सागर के भीतर से निकल आयेंगे।

यह जमाना धरती के बचपन का जमाना है, फिर भी धरती के बारे में हम बहुत कम जानते हैं। जबसे धरती बनी है तबसे आज तक एक हजारवें हिस्से का हाल ही हम जान पाये हैं। अभी भी धरती के बारे में बहुत-कुछ जानना बाकी है और मनुष्य नित उसके बारे में नई-नई बातें जान रहा है।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# हमारे मुस्लिम संत

: १ :

## जाफ़र सादिक़

तपस्वी जाफ़र ऊंचे दर्जे के संत थे। लोगों की उनमें बड़ी श्रद्धा थी, कुरान के गूढ़ तत्व को समझने और समझाने में वह अपने ढंग के एक ही थे।

उसी समय में अरब का खलीफ़ा मंसूर था। जाफ़र का नाम चारों ओर फैला तो मंसूर को बड़ी डाह हुई और उसने उन्हें मारने के लिए पकड़वाकर मंगवाया। मंत्रियों ने खलीफ़ा को बहुतेरा समझाया कि ऐसे त्यागी-तपस्वी महात्मा पर हाथ उठाना पाप होगा, लेकिन मंसूर न माना। खलीफ़ा ने आज्ञा दी कि सादिक़ के आने पर मैं अपना मुकुट उतारूंगा, उसी समय उनका सिर उड़ा दिया जाय।

तपस्वी सादिक़ आये। मंसूर ने उनका आदर के साथ स्वागत किया। उन्हें ऊंचे आसन पर बैठाया। स्वयं बड़ी नम्रता से उनके सामने बैठा। सादिक़ के सिर काटनेवाले यह देखकर चकित थे कि आखिर खलीफ़ा इतना कैसे बदल गया। खलीफ़ा ने उनसे पूछा, "मैं आपकी क्या सेवा करूं ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सादिक़ बोले, "बस यही कि आगे फिर कभी मुझे बुलाकर मेरी तपस्या में खलल न डालना।"

खलीफ़ा ने उनकी बात मान ली और आदर से उनको बिदा किया।

... ... ...

सादिक़ बहुत ही नम्र स्वभाव के थे। एक बार तपस्वी दाऊद ने उनसे कहा, "मेरा दिल बुरी-बुरी बातों के उठने से मलिन हो रहा है। कृपा करके मुझे उपदेश दीजिये।"

सादिक़ ने कहा, "आप-जैसे बैरागी को मैं उपदेश दूं ? मुझे तो खुद बड़ी फिक्र है कि कयामत के दिन हज़रत मुहम्मदसाहब मेरी ओर इशारा करके कहेंगे कि तू मेरे रास्ते पर क्यों नहीं चला। किसी खान्दान में पैदा होने से कोई उपदेशक थोड़ा बन जाता है। उसके लिए चाहिए सदाचार।"

यह सुनकर दाऊद की आंखों में आंसू भर आये। बोले, "खुद पैगम्बरसाहब के खान्दान के होते हुए भी जब ये तपस्वी अभिमान से इतने रहित हैं तब मेरा-जैसा छोटा प्राणी अपने आचरण पर क्या घमंड करे !"

... ... ...

एक आदमी के रुपयों की थैली चोरी हो गई। उसने गलती से चोर समझकर सादिक़ को पकड़ लिया। सादिक़ ने पूछा, "तुम्हारी थैली में कितने रुपये थे ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने बताया—–एक हज़ार ।

सादिक़ ने उसे अपने पास से रुपये दे दिये । कुछ समय बाद असली चोर पकड़ा गया । वह आदमी सादिक़ के रुपये लौटाने के लिए दौड़ा आया । सादिक़ ने उससे कहा, "मैं दी हुई चीज वापस नहीं ले सकता ।"

"मैं दी हुई चीज़ वापस नहीं ले सकता ।"

सपर वह आदमी अपनी करनी पर पछताया ।

... ... ...

एक दिन एक आदमी ने आकर सादिक़ से कहा—"मैं ईश्वर का दर्शन करना चाहता हूं ।"

सादिक़ ने जवाब दिया, "क्या तुम भूल गये कि ईश्वर ने कहा है—मैं दिखाई नहीं पड़ूंगा ?"

बहुत समझाने पर भी जब वह आदमी नहीं माना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो सादिक़ ने उसके हाथ-पांव बंधवाकर नदी में डलवा दिया। थोड़ी देर पानी में रखने के बाद उसे निकलवाया। उस आदमी ने सोचा कि यह कैसा महात्मा है। ज़रा दलील करने पर ही ऐसी सज़ा देता है। डर के मारे वह गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन सादिक़ ने फिर उसे पानी में डलवा दिया। थोड़ी देर बाद निकलवाने पर वह माफी मांगने लगा। सादिक़ फिर भी नहीं माने। आखिरी बार उन्होंने उसे बहुत ही गहरे पानी में डलवा दिया, बेचारा जीवन से निराश हो गया। उस समय उसे एक सहारा सूझा और वह था ईश्वर का। वह भगवान का नाम लेकर प्रार्थना करने लगा। सादिक़ ने तब उसे बाहर निकलवाकर पूछा, "क्यों, ईश्वर को देखा ?"

उस आदमी ने जवाब दिया, "जबतक मैंने दूसरे का सहारा ले रक्खा था, तबतक बीच में एक पर्दा था, लेकिन जब मैं एक उसीका सहारा मानकर उसकी शरण में गया और उसके लिए व्याकुल होगया तब मेरे हृदय का द्वार खुल गया और मुझे अपने अंतर में ईश्वर के दर्शन हुए। मन की अशांति दूर हो गई।"

सादिक़ ने कहा, "ठीक है, जबतक तुम मुझे पुकारते थे, झूठे रास्ते पर थे। अब तुम्हारे दिल के दरवाजे खुल गये हैं। अब इस बात की सावधानी रखना कि ये बंद न होने पावें। आदमी को और सब सहारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़कर ईश्वर का सहारा लेना चाहिए।

: २ :

## अबुल अब्बास नहाओन्दी

तपस्वी अबुल अब्बास बड़े ज्ञानी और बैरागी थे। उन्होंने कहा है कि अपनी साधना के शुरू के बारह साल तक मैं सिर झुकाये रहता। इससे मुझे बहुत-कुछ तत्वज्ञान मिला। कई लोग ईश्वर-दर्शन—ईश्वर को अपना बनाने की इच्छा रखते हैं, लेकिन मेरी तो यही इच्छा थी कि ईश्वर मुझे ऐसे थोड़े-से क्षण तो दे, जब मैं परमात्म-दर्शन कर सकूं, यानी यह जान सकूं कि मैं कौन हूं, कैसा हूं और कहां हूं?

अब्बास टोपी सींकर अपना पेट भरते थे। वह एक टोपी की मेहनत के दो पैसे लेते, जिनमें से एक पैसा भिखारी को दे देते और दूसरा पैसा खाकर पूरा करने पर ही नई टोपी का काम हाथ में लेते थे।

अब्बास का एक शिष्य था, बहुत पैसेवाला। अपने धन में से कुछ हिस्सा वह अलग करता जाता। उस हिस्से को कैसे दान दे? इस बारे में उसने अब्बास से पूछा। उन्होंने कहा, "अच्छे पात्र को देना चाहिए।"

अब्बास के यहां से लौटते ही रास्ते में उस शिष्य को एक अंधा मिला। उसे ठीक आदमी समझकर उसने एक सोने की मुद्रा उसे दे दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे ही दिन उसने सुना, वह अंधा किसी दूसरे अंधे से कह रहा था—कल एक आदमी मुझे एक मोहर दे गया। मैंने उससे खूब शराब पी और मौज की।

यह सुनकर उस धनी आदमी को बड़ा दुःख हुआ। उसने यह बात अब्बास को सुनाई। अब्बास ने एक पैसा उसके हाथ में देकर कहा, "जाओ, सबसे पहले जो आदमी मिले, उसीको यह पैसा दे दो।"

कहने की जरूरत नहीं कि यह पैसा अब्बास को टोपी बेचकर मिला था।

धनी शिष्य ने पहले आदमी के मिलते ही वह पैसा दे दिया और यह देखने के लिए कि वह क्या करता है, उसके पीछे हो लिया। उस आदमी ने एक निर्जन जगह में जाकर अपनी झोली खोली और उसमें से एक मरे हुए पक्षी को निकालकर बाहर फेंक दिया। यह देखकर वह धनिक आगे बढ़ा और उससे पूछा कि क्यों भाई, तुमने यह क्या किया? वह बोला, "मेरे घर के लोग सात दिन से भूखे थे। भीख मांगना मुझे पसंद नहीं। लाचार होकर भूख मिटाने के लिए मैंने यह मरा हुआ पक्षी उठा लिया था। आपने मुझे एक पैसा दे दिया। अब मुझे इस पक्षी की जरूरत ही नहीं रह गई।"

धनी ने लौटकर यह बात अब्बास को सुनाई। अब्बास ने कहा, "तुमने अपना धन अवश्य ही अत्याचारियों और दुराचारियों की मदद से पाया होगा। इसलिए तुम्हारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन के दान का यह नतीजा निकला। न्याय से मिले हुए मेरे एक पैसे ने एक गरीब आदमी को निषिद्ध भोजन से बचा लिया, इसमें नई बात क्या है!"

... ... ...

एक दिन ईश्वर को न माननेवाला एक आदमी एक दूसरे तपस्वी की झोंपड़ी में गया। वह बड़े तेज़ स्वभाव के थे। देखते ही पहचान गये। बोले, "अरे, तू यहां कैसे ?"

उस आदमी ने समझ लिया कि यहां उसकी दाल नहीं गलने की। सो वह अब्बास के पास पहुंचा। अब्बास ने उसे पहचान लिया, पर वह कुछ भी बोले नहीं। वह वहां चार महीने तक रहा। धोखा देने के लिए वह रोज सबके साथ नमाज़ पढ़ता। एक दिन अब्बास ने उससे कहा, "आपका यहां के अन्न-जल के साथ संबंध हो गया है। अब आप यहां से मेरे प्रति विरोध का भाव लेकर जायं तो ठीक नहीं होगा।"

उस दिन से उस आदमी का ईश्वर पर विश्वास हो गया और वह अब्बास की संगति में रहकर साधना करने लगा। आगे चलकर वह एक सिद्ध-पुरुष हुआ और जब अब्बास का देहांत हुआ तो उसने उनकी जगह ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ३ :

# अबु उस्मान हयरी

अबु उस्मान हयरी खुराशान के रहनेवाले थे। उनका घराना बड़े ऊंचे दर्जे का था। खुराशान में उन्होंने धर्म का प्रचार किया और एक जगह उपदेश-पीठ की स्थापना की, जहां वह धर्म के बारे में चर्चा किया करते थे। एक जगह उन्होंने कहा है—"बचपन से ही मेरा हृदय ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। संसार-प्रेमी लोगों का समागम मुझे रुचता नहीं था। मेरे मन में यही विचार उठता रहता था कि ये लोग जिन चीजों को पाने के लिए परेशान हो रहे हैं उनसे भी ज्यादा महत्व की कोई चीज होनी चाहिए। आगे चलकर मुझे मालूम हुआ कि वह चीज है—धर्म।"

बचपन में एक बार वह मदरसा जा रहे थे। कीमती कपड़े पहने थे, साथ में तीन-चार नौकर थे। रास्ते में उन्हें एक गधा दिखाई दिया। उसकी पीठ पर एक बड़ा-सा घाव था और कौए उसमें चोंच मार रहे थे। उन्हें बड़ी दया आई। उन्होंने अपनी पगड़ी उतारकर उसके घाव पर पट्टी बंधवा दी और अपना कीमती शाल उसे ओढ़ा दिया।

... ... ...

एक दिन एक धर्म-द्रोही ने उस्मान को अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी पगड़ी उतारकर घाव पर बांधने के लिए दे दी।

यहां भोजन करने को बुलाया। उस्मान ठीक समय पर उसके घर पहुंच गये। उन्हें देखकर वह बोला, "बेव-कूफ कहीं का! यहां अपने बाप की धन-दौलत रख गया था क्या, जो दौड़ा-दौड़ा खाने चला आया, जा भाग यहां से।"

उस्मान बिना कुछ कहे-सुने लौट पड़े। कुछ ही कदम गये होंगे कि उस आदमी ने उन्हें आवाज दी। वह लौटे। वह बोला, "खाने का लालच है तो ले यह पत्थर खा।"

उस्मान चुप रहे और फिर लौट गये। उस आदमी ने उन्हें फिर बुलाया और हैरान किया। इस प्रकार तीन बार उसने उन्हें बुलाया। फिर भी उनके चेहरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर शिकन तक न आई। आखिर उस आदमी की आंखें खुल गईं और वह उस्मान के पैरों पर गिरकर रोने लगा। उसने उनके धीरज और सहनशीलता की सराहना की तो वह बोले, "भाई, इसमें कौन बड़ी बात है! कुत्ते का भी तो यही स्वभाव होता है। दुतकारे जाने पर भी ज़रा से बुलावे पर वह पूंछ हिलाता चला आता है। उसे न खुशी होती है न दुःख। मैंने तो कुत्ते का-सा काम किया है। इसमें प्रशंसा की क्या बात है?"

... ... ...

एक दिन रास्ते में जाते समय इनके सिर पर किसी आदमी ने कोयले की टोकरी उंडेल दी। उस्मान के साथी इकट्ठे होकर उस आदमी को बुरा-भला कहने लगे। उस्मान ने कहा, "भाइयो, इस काम के लिए तो इस आदमी को धन्यवाद देना चाहिए। जिसके सिर पर धधकती आग की वर्षा होनी चाहिए थी, उसपर इसने ठंडे कोयले ही फेंके। यह तो इसका महान् उपकार है।"

... ... ...

एक दिन एक दुराचारी लड़का हाथ में बाजा लेकर मतवाले की तरह झूमता रास्ते में चला आ रहा था। अचानक उस्मान से उसकी मुलाकात हुई। लड़का शर्मिंदा होकर अपना बाजा लेकर कपड़ों में और बाल टोपी में छुपाने लगा। वह डरा कि कहीं तपस्वी उस्मान उसकी असलीयत को जान न जायं। उस्मान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने जब यह देखा तो बड़े प्यार से बोले, "भाई, डरो मत। हम सब एक-से हैं।

उनकी बात सुनकर लड़का पानी-पानी हो गया। उस्मान उसे अपनी कुटिया में ले गये। स्नान करवाया और दूसरे कपड़े पहनने को दिये। फिर ऊपर को निगाह उठाकर बोले, "या खुदा, मुझसे जैसा बन पड़ा, मैंने किया। बाकी का काम तो तुझे करना होगा।"

कहना न होगा कि उस्मान के बर्ताव से उस लड़के के हृदय में भक्ति-भाव पैदा हुआ और उसका जीवन बदल गया।

... ... ...

एक आदमी ने एक दिन उनसे पूछा, "महात्मन्, मेरी जीभ तो भगवान का जप करती है, पर मन उस ओर नहीं लगता। मैं क्या करूं?"

उस्मान ने जवाब दिया, "भाई, एक इंद्रिय वश में आ गई इसीसे खुश होना चाहिए। एक अंग ने अच्छा रास्ता पकड़ा है तो एक दिन मन भी ठीक रास्ते पर आवेगा ही।"

... ... ...

एक दिन एक युवक मक्का की यात्रा करके उस्मान से मिलने आया। उसने उन्हें सलाम किया, लेकिन उस्मान ने उसे मंजूर न किया। इसपर वह युवक बड़-बड़ाने लगा। बोला, "एक मुसलमान दूसरे मुसलमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का सलाम मंजूर न करे यह तो बड़ा अन्याय है।"

उस्मान ने जवाब दिया, "भाई, तुमने अपनी माता को दुखित अवस्था में छोड़कर यात्रा की है, इसलिए यह तुम्हें फलेगी नहीं।"

यह सुनकर युवक बड़ा पछताया और फौरन लौट-कर अपनी माता की सेवा में जुट गया। कुछ दिन बाद मां की मृत्यु होने पर जब वह उस्मान के पास आया तो उन्होंने उसे बड़े प्यार से अपने पास रख लिया और युवक के मांगने पर उसे अपने जानवर चराने का काम सौंप दिया। वह युवक आगे चलकर उनका खास शिष्य हुआ।

: ४ :

## इब्राहीम आदम

इब्राहीम आदम पहले राजा थे, बाद में सबकुछ छोड़कर फ़कीर हो गये। जब वह बलख के राजा थे तब उन्होंने एक दिन रात में सोते समय महल में किसीके पैरों की आहट सुनी। वह इतनी तेज थी कि सारी छत हिलने लगी। चौंककर पूछा, "कौन है?"

आनेवाले ने कहा, "डरो मत। मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं, दोस्त हूं। मेरा ऊंट खो गया है, उसीको खोजने आया हूं।"

इब्राहीम बोले, "इतने ऊंचे महल में ऊंट कहां से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवेगा ?"

आनेवाले ने कहा, "अरे, नासमझ तू भी इतने ऊंचे राज-महल में सोने के सिंहासन पर बैठकर ईश्वर को खोजना चाहता है। मेरी बात से तुझे क्यों अचरज हुआ ?"

इतना कहकर वह आदमी गायब हो गया। उसकी बातों का इब्राहीम के मन पर बहुत असर पड़ा। उनके मन में अशांति पैदा हो गई।

इतने में ही एक और घटना घटी। एक दिन वह अपने कर्मचारियों के साथ राजकाज संभाल रहे थे कि एक आदमी वहां आया। इब्राहीम ने उससे पूछा, "आप क्या चाहते हैं ?"

उस आदमी ने जवाब दिया, "और कुछ नहीं, सिर्फ एक दिन इस मुसाफिरखाने में रहना चाहता हूं।"

"यह मुसाफ़िरखाना नहीं, राजभवन है।"

"तुमसे पहले इस मकान में कौन रहता था ?"

"मेरे पिता।"

"उनसे पहले ?"

"मेरे दादा।"

"उनसे पहले ?"

"उनके पिता।"

"जब इस मकान में नये-नये आते और पुराने-पुराने जाते रहे हैं तो ये मुसाफिरखाना नहीं तो क्या है ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो इब्राहीम के दिल में वैराग्य की आग तेज होगई। दुनिया में उन्हें चैन नहीं था। एक दिन अपने नौकर को साथ लेकर घोड़े पर सवार हो वह जंगल की ओर चल दिये। वहां पहुंचकर वह भटक गये। नौकर बिछुड़ गया। इतने में ही अचानक आवाज आई—जागृत हो। इब्राहीम ने इधर-उधर देखा, पर कोई दिखाई न दिया। दो बार फिर उन्हें वही आवाज सुनाई दी। इब्राहीम चकित होकर देखने लगे। चौथी बार उन्हें सुनाई दिया—मौत आकर तुझे जगावे उससे पहले ही जाग जा।

उन्होंने राजा की पोशाक छोड़ दी और मामूली कपड़े पहनकर इधर-उधर घूमने लगे। फिर एक गुफा में जाकर नौ बरस रहे। इस अरसे में उन्होंने अपनी बुराइयों को जीता।

चौदह साल तक बहुत-से स्थानों और जंगलों में घूमने के बाद वह मक्का गये। उनके आने का समाचार सुनकर मक्का के रहनेवालों ने उनके स्वागत की तैयारियां कीं। जब इब्राहीम को इसकी खबर मिली तो वह व्यापारियों के काफिले के साथ इस तरह मिलकर मक्का पहुंचे कि कोई भी उन्हें पहचान न सका।

एक आदमी खोजता हुआ उसी क़ाफिले में आया और संयोग की बात कि उसने स्वयं इब्राहीम से पूछा, "क्या आपने तपस्वी इब्राहीम को देखा है? मक्का के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोग उनका स्वागत करना चाहते हैं।"

इब्राहीम ने कहा, "उस पाखंडी इब्राहीम से तुम्हें क्या काम ? उससे तुम्हें क्या फायदा होगा ?"

यह सुनकर वह आदमी आग-बबूला हो उठा, इब्राहीम को खरी-खोटी सुनाते हुए बोला, "उस महा-पुरुष को पाखण्डी बतानेवाला तू खुद कोई पाखण्डी दिखाई देता है।"

"हां भाई, मैं जरूर ही पाखंडी हूं," उन्होंने शांति से उत्तर दिया, फिर अपने मन को इशारा करते हुए बोले, "रे दुष्ट मन, तुझे आज ठीक ही सजा मिली है।" वह भगवान को धन्यवाद देने लगे। यह हाल देखकर वह आदमी ताड़ गया कि हो-न-हो, यही वह तपस्वी हैं। वह रोकर उसके पैरों पर पड़ गया और बार-बार माफी मांगने लगा। इब्राहीम ने हँसकर कहा, "तुमने तो ठीक ही कहा था, भाई। मैं खुद जानता हूं कि मेरा मन कितना पाखंडी है !"

... ... ...

मक्का में रहकर उन्होंने बहुत-से तपस्वियों का साथ किया। अपनी मेहनत से ही वहां भी वह पेट भरते थे। जंगल से लकड़ियां या साग-भाजी ले आते और उन्हें बेचकर अपना काम चलाते। राजपाट छोड़ते समय उनका एक छोटा-सा लड़का था। बड़ा होने पर वह भी अपनी मां के साथ मक्का की यात्रा करने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया। इब्राहीम का नियम था कि वह सबेरे ही जंगल में चले जाते और शाम होने पर मक्का लौटते, लकड़ियां बेचते, खुराक खरीदते, गरीबों को भीख देते, शाम की नमाज पढ़ते, फिर खुद खाते। कई बार आटा खरीदकर रोटी बनाते, गरीबों को खिलाते और खुद खाते।

मक्का में आने पर एक दिन बेटे ने देखा कि पिता सिर पर लकड़ियों का बोझ लिये आ रहे हैं। यह देखकर वह दुखी होकर रोने लगा। अपने मालिक की ऐसी हालत देखकर उसकी बीवी भी रोने लगी। काबा के पास ही बाप-बेटे का मिलाप हुआ था। इब्राहीम बड़े प्यार से अपने बेटे से मिले। बेटा भी वहीं रहने लगा। कुछ दिन बाद वह चल बसा।

एक रात को इब्राहीम का एक साथी बहुत बीमार हो गया। सर्दी की रात। बोटी-बोटी कांप रही थी। घास-फूंस के झोंपड़े के दरवाजे में किवाड़ें भी नहीं थीं। रोगी को सर्दी से बचाने के लिए इब्राहीम रातभर दरवाजे को रोककर खड़े रहे।

... ... ...

एक आदमी ने बताया, "एक बार मैं इब्राहीम के साथ सफर कर रहा था। रास्ते में मैं बहुत बीमार हो गया। अपना सब कुछ बेचकर उन्होंने मेरी सेवा की। जब अपने पास कुछ न बचा तो मेरा खच्चर बेच दिया। होश आने पर जब मैंने खच्चर बिक जाने से इस बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर दुःख प्रकट किया कि अब रास्ता कैसे कटेगा तो उन्होंने कहा, "मेरे कंधे पर बैठकर चलना। उन्होंने मुझे तीन दिन तक अपने कंधे पर बिठाकर आगे का सफर किया।"

... ... ...

इब्राहीम जंगल में अकेले रहते थे। एक दिन उन्हें खाना न मिला। वह ईश्वर को धन्यवाद देकर रातभर ध्यान में लगे रहे। अगले दिन भी ऐसा ही हुआ। इस तरह सात दिन और बीत गये। भूख से उनकी देह बहुत कमजोर हो गई, तो वह बोले, "हे प्रभो, अब खाना मिल जाय तो ..."

"तीन दिन तक मुझे कंधे पर बिठाकर उन्होंने सफर किया।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना कहते ही एक लड़का वहां आया और बड़ी इज्जत से उन्हें अपने घर ले गया। उसे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि वह तपस्वी इब्राहीम हैं। मगन होकर उसने कहा, "आपके आने से मैं धन्य हो गया। मेरा सारा धन आपके चरणों में है। मैं आपका किंकर होकर रहूंगा।"

इब्राहीम बोले, "तुमने मुझे जो देने का विचार किया है, उसे मैं तुम्हें वापस करता हूं। मुझे अब छुट्टी दो, मैं अपनी जगह लौट जाऊं।"

इतना कहकर वह वहां से लौट पड़े। रास्ते में आसमान की ओर देखकर उन्होंने कहा, "हे परवरदिगार मेरी तो बस इतनी ही इच्छा है कि खाने को कुछ मिल जाय। मुझे तो रोटी चाहिए। इतने धन का लालच क्यों देते हो?"

... ... ...

एक बार एक पैसेवाले ने हजार अशर्फी की थैली उनके पास लाकर उसे मंजूर करने को कहा। उन्होंने जवाब दिया, "मैं गरीब की एक पाई भी नहीं लेना चाहता।"

पैसेवाले ने कहा, "मैं गरीब नहीं हूं, धनवान हूं।"

"पर तुम्हें तो अभी और धन की लालसा बनी है न?"

"जी हां।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"धनी होते हुए भी जिसकी धन की इच्छा दूर नहीं हुई है, उसे मैं सबसे ज्यादा गरीब मानता हूं।"

... ... ...

एक बार वह सड़क पर चले जा रहे थे। उन्हें देखकर चौकीदार ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

"गुलाम।"

"कहां रहता है ?"

"कब्रिस्तान में।"

इस जवाब को अपना मजाक समझकर उस सिपाही ने उनके दो-चार कोड़े जमा दिये; लेकिन बाद में उसे जब यह मालूम हुआ कि वह इब्राहीम हैं तो उनके पैरों पर सिर टेककर माफी मांगने लगा।

इब्राहीम ने कहा, "तुमने जो काम किया उससे मुझे फायदा ही होगा। मैं तो तुम्हारे भले के लिए ही कामना करूंगा।"

अपनी बात को समझाते हुए उन्होंने कहा, "भाई, सारे लोग भगवान के दास हैं। मैं भी उसीका दास हूं। उन सब गुलामों का आखिरी घर तो एक कब्रिस्तान ही है। इसमें मैंने झूठ क्या कहा ?"

एक फकीर को अपनी गरीबी और फकीरी पर अफसोस करते हुए देखकर उन्होंने कहा, "क्यों भाई, फकीरी तुम्हें मुफ्त में मिल गई है क्या ?"

वह बोला, "तो फकीरी भी कहीं मोल बिकती है?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"जी हां, मैंने तो बलख का राज देकर ली है।"

: ५ :

## राबिया

तुर्किस्तान के बसरा नगर में किसी गरीब के घर राबिया का जन्म हुआ था। अरबी भाषा में 'राबा' का मतलब है चौथा। इससे मालूम होता कि वह चौथी पुत्री थीं। उनके बड़े होते ही देश में अकाल पड़ा और उनके माता-पिता का देहांत हो गया। इससे उनका अपनी बहनों से भी बिछोह होगया। एक नीच आदमी ने राबिया को किसी धनवान के हाथ बेच दिया। वह राबिया से खूब काम लेता और वह काम न कर पाती तो उसे मारता। दुखी होकर राबिया एक दिन वहां से निकल भागीं। भागते-भागते वह रास्ते में गिर पड़ीं और उनका हाथ टूट गया।

इतने पर भी उन्हें एक दूसरे सेठ के यहां नौकरी करनी पड़ी। दिन में मालिक की चाकरी करतीं और रात को धर्म-ग्रंथ पढ़तीं, उपासना करतीं। इस बात को कई दिन बीत गये। एक दिन सेठ ने रात को उठ-कर देखा, राबिया अपनी कोठरी में बैठी ध्यान कर रही हैं। बाद में उन्होंने प्रार्थना की––

"हे प्रभु, तू सबकुछ जानता है। तुझसे कुछ भी छिपा नहीं है। मैं हमेशा तेरा ही हुकुम बजाती रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूं। आगे भी तेरे हुकुम का पालन करते-करते ही मरूं, ऐसी मेरी इच्छा है। तेरी ही सेवा में रात-दिन बीतें, यह मैं चाहती हूं। पर करूं क्या ? तूने मुझे दूसरे की दासी बनाया है। इसलिए मैं अपना सारा समय तेरी उपासना के लिए नहीं दे सकती। हे प्रभु, इसके लिए मुझे क्षमा कर।"

राबिया की ऐसी प्रार्थना सुनकर उस सेठ पर गहरा असर पड़ा। उसने राबिया के मुंह पर बड़ा तेज देखा। 'ऐसी पाक स्त्री की सेवा तो मुझे करनी चाहिए', ऐसा विचार उसके मन में उठा। दूसरे ही दिन उसने राबिया को गुलामी से मुक्त कर दिया और कहा, "आप मेरे घर में रहेंगी तो मैं आपकी सेवा करूंगा। आप किसी दूसरी जगह जाना चाहें तो आपकी इच्छा !"

राबिया ने उससे विदा ले ली। उसके बाद उन्होंने बड़ी कठोर तपस्या का जीवन बिताया। रात-दिन धर्म-ग्रंथ पढ़तीं और ईश्वर की उपासना में लीन रहतीं। अपने जीवन का शेष भाग उन्होंने मक्का में बिताया। वह हमेशा कुमारी रहीं। कहते हैं, वह आज से बारह-सौ साल पहले हुई थीं। उन्होंने अपना जीवन ऐसा बना लिया था कि उनके दर्शन करने तथा उनके उपदेश सुनने के लिए लोगों की भीड़ लगी रहती थी।

... ... ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बसरा में हुसेन नाम के एक महर्षि रहते थे। एक बार उन्होंने राबिया से पूछा, "तुम्हारी इच्छा ब्याह करने की है ?"

राबिया ने जवाब दिया, "विवाह तो होता है शरीर का। मेरे पास शरीर कहां ? यह शरीर तो मैं ईश्वर को सौंप चुकी हूं। अब तो यह उसीके आधीन है। उसीके काम में लगा है। कहो, मैं अब कौन-से शरीर का विवाह करूं।"

एक बार हुसेन ने पूछा, "तुमने यह ऊंची जगह कैसे पाई ?"

"मुझे जो चीजें मिली थीं, उन सबको खोकर।"

"ईश्वर को कैसा समझती हो ?"

"वह कैसे हैं, यह तो आप भी जानते हैं। मैं तो उन्हें अरूप, अमाप मानती हूं।"

... ... ...

किसी आदमीं ने राबिया से पूछा, "पापरूपी राक्षस को आप दुश्मन समझती हैं न ?"

राबिया ने जवाब दिया, "ईश्वर के प्रेम में मगन रहने के कारण न मुझे उससे कोई दुश्मनी करनी पड़ती है, न लड़ाई।"

... ... ...

एक बार एक आदमी माथे पर पट्टा बांधकर उनके पास आया। उसका सिर दर्द कर रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राबिया ने उससे पूछा, "कितने साल के हो गये ?"

"तीस साल का।"

"अबतक तंदुरुस्त थे या बीमार ?"

"तंदुरुस्त।"

"इतने साल तक तो कृतज्ञता प्रकट करने के लिए तुमने माथे पर कुछ नहीं बांधा। आज जरा बीमार होते ही शोक की निशानी में यह पट्टा बांध लिया !"

... ... ...

एक बार दो फकीर राबिया के दर्शन के लिए आये। वे भूखे थे। आपस में बात करने लगे कि अगर कुछ खाने को मिल जाय तो खा लें।

राबिया के पास सिर्फ दो रोटियां थीं, उन्हें वह ले आई; पर इतने में ही एक तीसरा फकीर आकर रोटी मांगने लगा। राबिया ने दोनों रोटियां उसे दे दीं। यह देखकर उन दो फकीरों को बड़ा अचरज हुआ। तभी एक दासी रोटियां लेकर आई और राबिया से बोली, "मेरी मालकिन ने ये रोटियां आपके लिए भेजी हैं।"

राबिया ने गिनीं तो अठारह निकलीं। उन्होंने उस दासी को बिना रोटियां लिये लौटा दिया।

बाद में वह फिर आई। राबिया ने रोटियां गिनीं तो बीस निकलीं। उन्होंने उन्हें लिया और फकीरों को दे दिया। खाना खाते-खाते फकीरों ने भेद पूछा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो उन्होंने कहा, "आप दोनों भूखे हैं, यह मैं जान गई थी। मेरे पास दो ही रोटियां थीं। उनसे आप दोनों का पेट न भरता। इसलिए मैंने उन्हें उस तीसरे फकीर को दे दिया। इसके बाद मैंने प्रभु से प्रार्थना की, "हे प्रभु, तुमने कहा था कि मैं दान से दसगुना वापस देता हूं, इस बात पर मेरी श्रद्धा है। आपके संतोष के लिए मैंने अभी दोनों रोटियां दान में दे दीं। अठारह रोटियों को देखकर मुझे लगा कि भेजने में भूल हुई है। बाद में बीस आई हैं तो हिसाब से दस गुनी हो गईं और मैंने उन्हें ले लिया।"

... ... ...

एक दिन राबिया बीमार हो गईं तो दो जने उनकी तबीयत का हाल पूछने आये। एक ने कहा, "आप प्रार्थना करें। प्रभु आपको जरूर तंदुरुस्त करेगा।"

राबिया ने उसकी ओर देखकर कहा, "तुम नहीं जानते, उसीकी इच्छा से रोग पैदा होता है। मेरे इस रोग में क्या उस प्रभु का हाथ नहीं है ?"

"हां, उसकी इच्छा तो होगी ही।"

"इतना मालूम होते हुए भी क्यों कहते हो कि मैं उसकी इच्छा के खिलाफ प्रार्थना करूं ? जो अपना बहुत ही दोस्त है, उसकी इच्छा के खिलाफ बर्त्ताव करना क्या एक स्नेही के लिए वाजिब है ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ६ :

# अब्दुल्ला खफ़ीफ़ पारसी

तपस्वी अब्दुल्ला ईश्वर के परम भक्त थे। वह पारस के रहनेवाले थे। बड़े ही धर्मात्मा। सभी धर्म-साधक उनके उपदेश सुना करते थे। 'खफ़ीफ़' का मतलब है छोटा। अब्दुल्ला कद में बहुत छोटे थे। इसीलिए उनका नाम खफ़ीफ़ पड़ गया था। दिनभर में वह सिर्फ सात ग्रास का भोजन करते थे। एक रात को उनके नौकर ने भूल से उन्हें आठ ग्रास दे दिये। नतीजा यह हुआ कि वह रात चैन से ईश्वर की आराधना में नहीं बिता सके। दूसरे दिन उन्होंने नौकर से पूछा तो उसने आठ ग्रास की बात बता दी। अब्दुल्ला ने कहा, "ऐसा तुमने क्यों किया ?"

वह बोला, "आपके कमजोर शरीर को देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। आपमें थोड़ी ताकत आवे, इसलिए मैंने ऐसा किया था।"

यह सुनकर अब्दुल्ला ने कहा, "तू मेरा भला चाहनेवाला नौकर होता तो मुझे सात के बदले छः ग्रास देता !"

उन्होंने उस नौकर की जगह दूसरा रख लिया। वह हमेशा कठोर साधना में लगे रहते थे।

... ... ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहमद और अहमदमाह नाम के उनके दो शिष्य थे। अहमद के लिए उनके मन में अधिक प्रेम था। यह बात अहमदमाह को खटकती थी। एक दिन अब्दुल्ला ने अहमद को बुलाकर कहा, "जाओ, घर के बाहर जो ऊंट बैठा है उसे सामने की भीत पर खड़ा कर दो।"

उसने कहा, "बहुत ठीक है।" और वह बाहर जाकर ऊंट को दीवार पर चढ़ाने की कोशिश करने लगा।

उसके बाद अब्दुल्ला ने अहमदमाह को बुलाकर उससे भी वही बात कही। वह तर्क करने लगा, "गुरुवर, ऊंट भीत पर किस तरह चढ़ सकता है?"

अब्दुल्ला ने दोनों शिष्यों को बुलाया और उन्हें सुनाकर कहा, "अहमद के मन का भाव मैं समझ गया। उसने अपने फर्ज का पालन किया। जो कहा गया उसने मुंह नहीं मोड़ा। कामयाबी मिलेगी या नहीं, इसका ध्यान रखे बिना वह जुट गया, लेकिन अहमदमाह तो मेरे हुक्म को शंका की निगाह से देखता है। उसके बाहरी आचरण से उसके मन का भाव साफ दिखाई देता ह।

...　　...　　...

एक दिन दो सूफी अब्दुल्ला खफ़ीफ़ के दर्शन करने के लिए दूर देश से आये। अब्दुल्ला इस समय अपनी कुटिया में नहीं थे। पूछने पर मालूम हुआ कि वह बादशाह के यहां गये हुए हैं। दोनों सूफी आपस में बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने लगे कि तपस्वी को राजा से क्या सरोकार ? इस विचार से उनके मन में तपस्वी अब्दुल्ला के लिए थोड़ी अश्रद्धा पैदा हुई। वे शहर में घूमने के लिए चले गये। बाजार में जाने पर उनमें से एक को अपनी फटी कफनी सिलवानी थी, इसलिए दोनों दर्जी के पास गये। संयोग से उसी समय उस दर्जी की अंगूठी गिरकर खो गई थी। उसने समझा कि दोनों सूफी ही चोर हैं। इसलिए उन्हें बादशाह की अदालत में ले गया। अदालत के अधिकारी ने दोनों के हाथ कटवा देने का हुक्म दिया। उसी समय खफ़ीफ़ उधर से निकले। उन्होंने कहा, "उन दोनों का कोई कसूर नहीं है।" और उन्हें छुड़वा दिया। इसके बाद वह उन्हें इज्जत के साथ अपनी झोंपड़ी की ओर लेकर चले। रास्ते में उन दोनों से बोले, "आप लोगों ने जो सोचा कि तपस्वी होकर मैं बादशाह के यहां क्यों जाता हूं, वह ठीक है। लेकिन बात असल में यह है कि किसी मामले में अन्याय न हो जाय, इसलिए मैं बादशाह के पास जाया करता हूं।"

यह सुनकर दोनों सूफी शरमा गये और हमेशा के लिए उनके शिष्य बन गये।

... ... ...

एक दिन एक मेहमान उनके घर आया। रात को उसको उल्टी होने लगी। बार-बार उल्टी होने से वह बहुत ही कमजोर हो गया। रातभर अब्दुल्ला उल्टी साफ़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते रहे। कोई पचास बार सफाई की होगी। बाद में उन्हें नींद आ गई। अतिथि को फिर उल्टी होने लगी। उसने चिल्लाकर कहा, "अरे मूर्ख, तू कहां चला गया। जल्दी आ।"

उसकी आवाज सुनकर अब्दुल्ला नींद से चौंके और झटपट बर्तन हाथ में लेकर उसकी तरफ दौड़े। इसपर उनके शिष्यों ने पूछा, "गुरुवर, ऐसी कड़वी बात बोलनेवाले की भी आप इतनी सेवा करते हैं। बड़े अचरज की बात है कि ऐसे बेहूदे शब्द सुनकर भी आप धीरज रखते हैं।"

अब्दुल्ला ने जवाब दिया, "चुप रहो, मैंने भी उसकी बोली सुनी है। पर इससे क्या हुआ। उसका स्वभाव कैसा ही हो, हमें अपना फर्ज अदा करते रहना चाहिए।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# बाहुबली और नेमिनाथ

## १—बाहुबली

: १ :

पुराने समय में हमारे देश में बाहुबली नाम के एक महापुरुष हुए हैं। उनकी वीरता और त्याग की कहानी बड़ी ही रोचक है। वह पोदनपुर के राजा थे। पोदनपुर का राज्य अयोध्या के पास था। इनके पिता का नाम ऋषभनाथ था और यह इक्ष्वाकु-वंश के थे।

महाराजा ऋषभनाथ अयोध्या में राज्य करते थे। वह बहुत भले थे और उनके राज में प्रजा बड़ी सुखी थी।

उनके यशस्वती और सुनंदा नाम की दो रानियां थी। यशस्वती महारानी थी। उसके कई लड़के-लड़कियां थीं, जिनमें भरत सबसे बड़ा था। सुनंदा छोटी रानी थी और उसके दो संतानें थीं——बाहुबली और उसकी बहन। महाराजा के सभी बेटे-बेटियां योग्य और गुणवान थे। बड़े होने पर उन्होंने भरत को युवराज बनाया और दूसरे राजकुमारों को बड़ी-बड़ी जागीरें दीं। बाहुबली पोदनपुर के राजा हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन अचानक ऋषभनाथ महाराज के राज-दरबार में नीलांजना नाम की अप्सरा का नाचते-गाते लोप हो गया। इससे महाराजा का मन संसार और राजपाट से फिर गया। वह अपने बेटों को राज्य-काज सौंपकर साधु बन गये और बन में चले गये। घोर तप करने से उन्हें ज्ञान हो गया और उन्होंने लोगों को अहिंसा, दया और सत्य आदि का उपदेश दिया। इन्हीं ऋषभनाथ ने जैन-धर्म की नींव डाली। इन्हें आदिनाथ भी कहते हैं।

ऋषभनाथ के साधु बन जाने के बाद उनके लड़कों ने उनके काम को संभाला। बाहुबली बड़े ऊंचे शरीर-वाले, धीर और वीर पुरुष थे। इनकी भुजाएं लंबी और बलवान थीं। उन्हें देखकर उनका नाम ठीक ही लगता था। वह अपने बड़े भाई भरत से उम्र में छोटे थे, पर बल, गुण और चतुराई में उनसे कहीं बढ़-चढ़-कर थे। विनय, नम्रता और बड़ों का आदर करना, ये उनके खास गुण थे। अत्याचार और अन्याय के सामने वह नहीं झुकते थे।

: २ :

राज्यसिंहासन पर बैठने के कुछ समय बाद भरत के मन में चक्रवर्ती बनने की इच्छा पैदा हुई, पर उसके लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आसपास के सभी राजाओं को जीत लेना जरूरी था। वह सेना लेकर अपने राज्य से चला। जहां जाता वहीं उसे विजय मिलती। उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम सभी दिशाओं के राजा उसके अधीन हो गये। उसने सारे देश में अपना राज्य फैला लिया।

अपनी इस जीत से चक्रवर्ती भरत अभिमान से फूल उठा। संसार में अपनेको सबसे पहला चक्रवर्ती राजा समझकर उसने एक पर्वत पर अपने नाम का एक लेख खुदवाने की बात सोची। लेकिन वहां उसे इतने चक्रवर्ती राजाओं के नाम पहले ही से खुदे मिले कि अपना नाम खुदवाने के लिए उसे स्थान ही न मिला। तब उसने एक-दो नामों को मिटवाकर अपना नाम खुदवाया।

सबको जीतने के बाद जब भरत अयोध्या को लौटा तो शहर के द्वार पर आकर उसका चक्र रुक गया। महाराजा को बड़ा आश्चर्य और चिंता हुई। विद्वानों और मंत्रियों ने बताया कि अभी कुछ राजा बिना जीते रह गये हैं। वे राजा बाहर के नहीं, उसके अपने ही भाई हैं। उनको जीते बिना वह चक्रवर्ती नहीं हो सकता था।

भरत ने तत्काल अपने भाइयों को जीतने की तैयारी करने की आज्ञा दी। मंत्रियों ने उसे समझाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि क्रोध छोड़कर शांति और नीति से काम लीजिए, लेकिन भरत न माना।

उसने संदेश देकर राजदूतों को बाहुबली को छोड़ शेष सब भाइयों के पास भेजा। महाराजा का संदेश सुनकर वे सब बड़े असमंजस में पड़ गये। उनके सामने मान, अपमान और यश-अपयश की बात तो थी ही, लेकिन उससे भी बढ़कर भाई-भाई के संबंध का सवाल था। इसलिए सब एक जगह पर सलाह करने के लिए इकट्ठे हुए। बड़े सोच-विचार के बाद उन्होंने तय किया कि अपने पिता ऋषभनाथ से सलाह की जाय। वे उनके पास गये। दुनिया से विरक्त ऋषभनाथ भला इन बेटों को राज और जागीर-जैसी छोटी-सी चीज के लिए आपस में लड़ने की सलाह कैसे देते? उन्होंने कहा—"इस दुनिया में क्या रखा है। असली चीज तो प्रेम है।" उनके उपदेश को सुनकर सभी भाइयों ने अपनी-अपनी जागीरें छोड़ दीं और भरत की अधीनता स्वीकार न करके साधु बन गये।

बाहुबली रह गया।

: ३ :

बाहुबली को भरत के इनसब कामों की सूचना हर समय अपने गुप्तचरों से मिलती रहती थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचानक एक दिन भरत का राजदूत बाहुबली के दरबार में आया। उसे देखकर बाहुबली का माथा ठनका। फिर भी उसने भरत की कुशलता मालूम की और आने का कारण पूछा। राजदूत ने कहा, "महाराज, आपके बड़े भाई भरत चक्रवर्ती होगये हैं। सभी राजाओं ने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली है। इतने बड़े राज्य को संभालने के लिए हमारे महाराजा आपका सहयोग चाहते हैं। आप उनसे मिलने का कष्ट करें।"

बाहुबली ने मुस्कराते हुए कहा, "हमें अपने बड़े भाई भरत के चक्रवर्ती बनने का समाचार सुनकर बड़ी खुशी हुई। पर जैसा सहयोग वह चाहते हैं, हम नहीं दे सकेंगे। एक हाथ में तलवार लेकर दूसरे हाथ से हमारा साथ नहीं मांगा जा सकता। आप जाकर अपने राजा को हमारी बात समझा दें।"

राजदूत ने बाहुबली को सब तरह से समझाया, पर वह न माना। जब नाममात्र की अधीनता मानने से भी बाहुबली ने इन्कार कर दिया तब राजदूत ने लाचार होकर भरत का युद्ध का संदेश उसे सुनाया। इसपर बाहुबली ने तनकर कहा, "युद्ध ! युद्ध की यह धमकी ! जाओ, कह दो कि हम युद्ध से नहीं डरते। पर वह जरा सोच-समझकर युद्ध करें। उसकी सारी जिम्मेदारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हींपर होगी ।

राजदूत लौट आया और उसने भरत को सब बातें

बाहुबली बोला, "जाओ, कह दो कि हम युद्ध से नहीं डरते ।"

सुना दीं । सुनते ही वह क्रोध से लाल हो गया । मंत्री चिंता में पड़ गये । भरत ने मंत्रियों से कहा कि बिना लड़ाई लड़े बाहुबली नहीं मानेगा । इसलिए लड़ाई की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैयारी करो।" मंत्रियों ने प्रार्थना की कि एक बार फिर कोशिश की जाय।

भरत और बाहुबली के मंत्री पोदनपुर में मिले। प्रजा और दोनों भाइयों की भलाई को सामने रखकर चर्चा हुई, पर बाहुबली किसी तरह भी भरत की अधीनता मानने को राजी न हुए। तब मंत्री बिना किसीका खून बहाये मामले को निबटाने की बात सोचने लगे। बहुत सोच-विचार के बाद दोनों भाइयों में दृष्टि-युद्ध, जल-युद्ध और मल्लयुद्ध करके हारजीत का फैसला करने की बात तय हुई।

मंत्रियों के धर्म-युद्ध के इस फैसले को सुनकर भरत बड़े प्रसन्न हुए। समय और स्थान तय करके उसकी सूचना बाहुबली को दे दी गई। भरत-बाहुबली में होने-वाले इस निराले युद्ध की खबर देश के कोने-कोने में बिजली की तरह फैल गई। छोटे-से राज्य के लिए होनेवाले इस युद्ध से सभीको बड़ा दुःख था।

नियत दिन आगया। एक बड़े मैदान में युद्ध की तैयारी की गई। इधर-उधर दर्शकों की भीड़ थी। बीच में फैसला करनेवाले और दोनों तरफ़ के बड़े-बड़े मंत्री खड़े थे। दोनों भाई अखाड़े में उतर आये। दोनों के गठे हुए सुडौल बलवान् शरीर, सुंदरता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेज को देखकर सभी वाह-वाह करने लगे। जोड़ बराबर का था। कोई नहीं कह सकता था कि किसकी जीत होगी।

दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को गहरी निगाह से देखा और जांचा। पहले दोनों का दृष्टि-युद्ध शुरू हुआ। बहुत देर तक दोनों आंखों से लड़ते रहे, पर किसीकी भी आंखें न झपकीं। बाहुबली कद में भरत से लंबे थे। इसलिए बाहुबली की आंखों से आंखें मिलाने के लिए भरत को अपनी गर्दन पीछे को झुकानी और आंखें ऊपर को उठानी पड़ती थीं। नतीजा यह हुआ कि भरत की गर्दन दुखने लगी और उनकी आंखें झपक गईं। दृष्टि-युद्ध में बाहुबली की जीत और भरत की हार हुई। बाहुबली के साथियों ने उनका जयकार किया।

इसके बाद दोनों भाई जलयुद्ध के लिए तालाब में कूद पड़े। उन्होंने एक-दूसरे पर खूब जल फेंका और दोनों तैरने लगे। इसमें भी जीत बाहुबली की ही हुई।

अब दोनों में मल्ल-युद्ध शुरू हुआ। दोनों ने कुश्ती का बचपन से अभ्यास किया था। जवानी में भी दोनों में कई बार कुश्तियां हुई थीं, पर इस कुश्ती पर दोनों के भाग्य का फैसला था। भाई-भाई ने आपस में हाथ मिलाये और तालें ठोकीं, खूब पैंतरे बदले और अपना-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना दावपेंच चलाया। कभी बाहुबली भरत पर झपटता तो कभी भरत बाहुबली की टांगों के बीच में

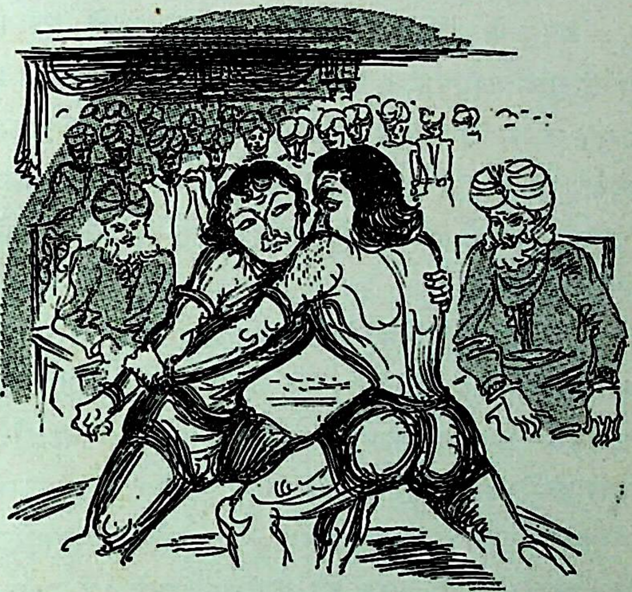

भरत और बाहुबली का मल्ल-युद्ध

घुसकर उसे पछाड़ने का प्रयत्न करता। लड़ते-लड़ते दोनों थककर चूर हो गये, पर कोई भी चित न हुआ। आखिर बाहुबली ने ऐसा पेंच चलाया कि भरत को अपनी दोनों भुजाओं में अपने सिर के ऊपर उठा लिया। अब बाहुबली के लिए भरत को धरती पर चित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पटककर उसकी छाती पर सवार होकर बैठ जाना आसान था। बाहुबली ने अपने बड़े भाई भरत के मान का ध्याम रखा और उसे अपने कंधों पर बिठा लिया।

भरत के मंत्री और सरदार लज्जित हो उठे। भरत हार के अपमान से नीति-अनीति को भूल गया। उसने धोखे से अपने चक्र को बाहुबली पर चला दिया, पर वह चक्र बाहुबली का कुछ न बिगाड़ सका। इसपर सभीने भरत की निंदा और बाहुबली की बड़ाई की।

धर्म-युद्ध की शर्तों के अनुसार बाहुबली अब भरत का सारा राज्य ले सकता था, पर इस सारी घटना से उसके मन में बड़ी उथल-पुथल मच गई। उसने सोचा और कुछ ही देर में उसका मन संसार से हट गया। हृदय ने ऐसा पलटा खाया कि वह संसार का एक बेजोड़ महापुरुष बन गया। उसने भरत को संबोधन करते हुए कहा, "सारे देश को जीतकर भी तुम्हें संतोष नहीं हुआ। अपने भाइयों का अधिकार छीनते हुए और मुझपर धोखे से चक्र चलाने में तुम्हें लज्जा नहीं आई। क्या यही तुम्हारी धर्मनीति और राजनीति है ? क्या भरत को यह सब शोभा देता है ? यह राज्य न किसीका रहा है, न तुम्हारा रहेगा। अब तुम्हीं इस राज्यलक्ष्मी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को भोगो। मैं उस सबको छोड़ता हूं।"

भरत मन-ही-मन लज्जित हुआ। उसने बाहुबली को बहुत समझाया, पर वह अपने इरादे से न टला।

: ४ :

युद्ध-भूमि में बाहुबली के मन में जो विराग पैदा हुआ था, वह पक्का होगया। राज्य और घर छोड़ने का उसका विचार मजबूत हो गया। उसने सोचा कि

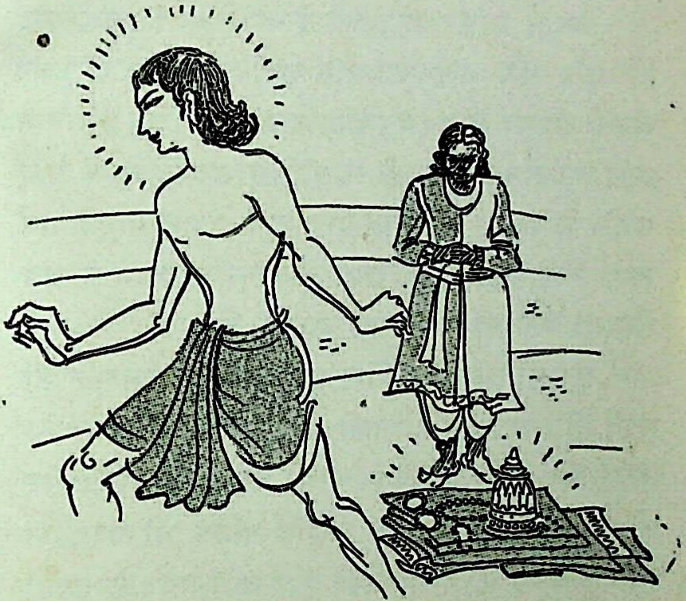

बाहुबली राजपाट छोड़कर वन को जा रहे हैं

आत्मा का काम संसार में बार-बार जन्म लेना और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरना नहीं है। आत्मा को इससे छुटकारा पाना चाहिए। मनुष्य-शरीर पाना कठिन है। उसको संसार के सुख-भोगों में गंवा देना समझदारी की बात नहीं है। यह सब सोचकर उन्होंने अपने बेटे महाबली को अपना राज्य सौंप दिया और स्वयं घर-बार छोड़कर अपने पिता ऋषभनाथ के बताये रास्ते पर चल पड़े। उनके साथ बहुत-से दूसरे लोग भी साधु बन गये।

बन में जाकर बाहुबली ने तप किया। उनकी एक ही धुन थी, इस नाशवान शरीर का मोह छोड़कर अपनी आत्मा को परमात्मा बनाया जाय। वह ज्ञानवान और बलवान तो थे ही, इसीलिए उन्होंने अपने लिए कठोर-से-कठोर तप और व्रत चुने। शुरू में एक वर्ष तक बिना हिले-डुले खड़े होकर तप करने का व्रत लिया। कितना कठोर था वह !

एक ही स्थान पर बिना कुछ खाये-पिये वह मूर्ति की तरह सीधे खड़े रहे। उनकी आत्मा ध्यान में लीन थी। बाहर की न उन्हें खबर थी न चिंता। उनके शरीर को अनेक कष्ट हुए, पर उन्होंने तनिक भी परवा न की। भूख-प्यास, गर्मी-सरदी और वर्षा आदि के कष्टों को उन्होंने कष्ट नहीं समझा। संसार की सब वस्तुओं को उन्होंने पहले ही त्याग दिया था। अब उनके मन में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी कोई मोह या इच्छा न रही। सोने का मैल आग में तपकर कटता है, ऐसे ही तपस्वी के कर्मों का मैल तप से दूर होता है। मुनिराज बाहुबली एक वर्ष के घोर तप से अपनी आत्मा शुद्ध कर रहे थे। इस लंबे तप में उनके शरीर के आसपास कहीं घास पैदा हो गई, तो कहीं बेलें उनकी देह पर चढ़ गईं। सांपों ने भी घुटनों से ऊपर तक मिट्टी की बांबी बना ली, पर बाहुबली को न उनका पता था न डर। उनका शरीर तप के कारण इतना पवित्र और निर्मल बन गया कि सांप भी उन्हें न काटते थे, उनसे खेलते थे। मन, वचन और तन से वह अहिंसा का पालन कर रहे थे। उनका जीवन उस वन के लिए एक चमत्कार बन गया। वहां सब तरफ़ शांति-ही-शांति होगई। सभी जीव-जंतु आपस के वैर को भूल गये और प्रेम से रहने लगे। घोर तप से बाहुबली का शरीर सूख गया, पर उनका तेज बढ़ गया।

इतना होते हुए भी बाहुबली के तप में एक कमी थी। उनके मन में एक मामूली-सा विचार कांटा बनकर उनके हृदय में चुभ रहा था। वह कभी-कभी सोचने लगते थे कि मेरे कारण मेरे बड़े भाई भरत को कष्ट पहुंचा। उनकी यह वेदना चल रही थी कि साल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भर का तप पूरा होने पर एक दिन चक्रवर्ती भरत मुनि-राज बाहुबली के दर्शन करने आये। बड़ी भक्ति और विनय से उनकी पूजा की, नमस्कार किया और उनकी परिक्रमा की। इसी समय बाहुबली के हृदय की वह टीस दूर हो गई। उन्हें पूर्ण ज्ञान हो गया।

इसके बाद बाहुबली कैलास पर्वत पर तप करने चले गये। वहीं से वह मोक्ष गये।

: ५ :

भरत ने उनकी याद में पोदनपुर में एक बहुत बड़ी, सुंदर और मूल्यवान मूर्ति बनवाई। स्त्री-पुरुष भक्ति से उनके दर्शन करते और बाहुबली के जीवन से शिक्षा लेते। पर समय के प्रभाव से वह मूर्ति प्राचीन काल में ही गायब हो गई। आज बाहुबली की बहुत ही विशाल प्रतिमा दक्षिण के श्रवणबेलगोल नामक स्थान में है। इस-के दर्शन के लिए देश के कोने-कोने से लोग आते हैं। मैसूर राज्य में विंध्यगिरि नामक पर्वत पर श्रवणबेलगोल की बस्ती है। उसी पर्वत में से काटकर ५७ फुट ऊंची यह विशाल मूर्ति बनाई गई है। लगभग एक हजार वर्ष पहले गंगवंश के राजा राचमल्ल के प्रसिद्ध मंत्री और सेनापति चामुण्डराय ने अपनी माता के दर्शनों के लिए यह मूर्ति बनवाई थी। चौदह-पंद्रह मील से यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशाल मूर्ति दिखाई देती है। यह उस अवस्था की है, जबकि बाहुबली खड़े होकर तपस्या कर रहे थे और बेलें उनके शरीर पर चढ़ गई थीं। शांति और अचल तप का भाव मूर्ति के अंग-अंग से प्रकट होता है। मूर्त्ति बनानेवाले कारीगर ने इसके बनाने में अपनी कारीगरी और चतुराई का कमाल कर दिखाया है। एक हजार वर्ष बीत जाने पर

बाहुबली की विशाल मूर्ति

भी धूप, हवा और वर्षा से इस मूर्ति में कोई अंतर नहीं पड़ा है। आज भी वह नई मालूम होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## २—नेमिनाथ

: १ :

बहुत दिनों की बात है। द्वारका में यदुवंश का राज था। इस वंश को हरिवंश भी कहते थे। भगवान कृष्ण इसी वंश के थे। इस वंश में और भी कई महापुरुष पैदा हुए। नेमिनाथ उनमें से एक थे। वह श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे और उम्र में उनसे छोटे थे। उनके पिता का नाम समुद्रविजय और माता का शिवादेवी था। श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव समुद्रविजय के छोटे भाई थे। समुद्रविजय में कई गुण थे। वह बड़े गंभीर थे, दानी थे और प्रजा की बड़ी अच्छी तरह देखभाल करते थे। नेमिनाथ की माता भी बड़ी गुणवती और धर्मात्मा थीं।

राजकुमार नेमिनाथ बहुत सुंदर थे। दया तो उनमें कूट-कूटकर भरी थी। धर्म की ओर उनका झुकाव अधिक था। दूसरे राजकुमारों की तरह उनका भी अच्छे ढंग से पालन-पोषण हुआ। विद्याएं सिखाई गईं। राजनीति और लड़ाई की कला में वह बहुत होशियार हो गये। उनका शरीर बड़ा बलवान था और वह बड़े हिम्मतवाले थे। बचपन की एक घटना है। एक दिन वह राज्य के हथियार-घर में चले गये। वहां वह नागशैया पर चढ़ गये और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने शारंग नाम का धनुष चढ़ा लिया। यह धनुष ऐसा था कि उसे केवल श्रीकृष्ण चढ़ा सकते थे। इतना ही नहीं, उन्होंने राजशंख को उठाकर बजाना शुरू कर दिया ये काम आसान न थे। बड़े-से-बड़ा लड़ाका भी नहीं कर सकता था। शंख की आवाज इतने जोर से हुई कि सारे शहर में खलबली मच गई। किसी बड़ी मुसीबत के आने पर ही इस शंख को बजाया जाता था। शहर के नरनारी डर से कांपने लगे। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह राजकुमार नेमिनाथ की करतूत है तब चैन पड़ा। श्रीकृष्ण ने उन्हें पास बुलाकर प्रेम से उनकी पीठ थपथपाई।

जब नेमिनाथ बड़े हुए तो उनके विवाह की बात चली। उनके माता-पिता के पास चारों तरफ से संदेश आने लगे। उनके लिए गुण, रूप और चतुराई में सब तरह से योग्य राजकुमारी मिलना आसान न था, पर अंत में उन्हें एक ऐसी ही कुमारी मिल गई। उसका नाम राजमती था। उसके पिता का नाम उग्रसेन था। वह जूनागढ़ के राजा थे। जूनागढ़ भारत के पश्चिम में एक पुरानी और प्रसिद्ध रियासत थी। माता-पिता प्यार से राजमती को 'राजुल' कहते थे।

राजुल फूलों के समान कोमल, चंद्रमा की तरह शीतल स्वभाववाली, सुंदर और महान गुणवती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजकुमारी थी। अपने इन गुणों के कारण वह दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। द्वारका और जूनागढ़ दोनों ही राज्यों में इस संबंध से प्रसन्नता हुई।

विवाह का दिन पास आने लगा। दोनों तरफ से जोरों की तैयारी होने लगी। द्वारका में राजा समुद्रविजय और श्रीकृष्ण की देखरेख में सब तैयारियां हो रही थीं। उधर जूनागढ़ में राजा उग्रसेन बरात के स्वागत और उसके ठहरने व भोजन आदि की व्यवस्था करा रहे थे। वहां के सब मर्द-औरतें काम में हाथ बंटा रहे थे। वे चाहते थे कि प्रबंध में कोई कमी न रहने पावे। जूनागढ़ की गली-गली को सजाया गया। जगह-जगह द्वार लगाये गये, बंदनवारें बांधी गईं। विवाह के लिए एक सुंदर मंडप तैयार किया गया। मंडप को चंवरों, छत्रों, मोतियों की झालरों, फूलमालाओं और रंग-बिरंगे कीमती रेशमी वस्त्रों से सजाया गया। सोने-चांदी के पत्रों से जड़े हुए खंभे मंडप की शोभा को दुगना कर रहे थे। मंडप के ठीक बीच में विवाह के लिए एक लंबी-चौड़ी सुंदर वेदी बनाई गई। उसके चारों तरफ हजारों आदमियों के बैठने का प्रबंध किया गया। भोजनशाला में तरह-तरह की मिठाइयां, नमकीन और साग-भाजियां तैयार हो रही थीं। हरएक बराती की रुचि का ध्यान रखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया था। बाजे बज रहे थे। मंगल-गीत गाये जा रहे थे। सब तरफ से वर-वधू के लिए आशीर्वाद और शुभ-कामनाएं आ रहीं थीं।

विवाह का दिन आया। बरात बड़ी सजधज के साथ द्वारका से जूनागढ़ आ पहुंची। इस बरात की शोभा का वर्णन कौन कर सकता है ? यह यदुवंश के राजकुमार की बरात थी। उसकी तैयारी में राजा समुद्रविजय और श्रीकृष्ण ने कोई कसर न छोड़ी थी। बरात में सजे हुए रथ, हाथी, घोड़े और सांडनियां थीं। बरात की भीड़ का अंदाज न था। हरएक बराती कीमती पोशाक और गहने पहने हुए था। बरात के आगे बाजे बज रहे थे। बाजों के पीछे और बरातियों के आगे नेमिनाथ बड़ी शान से राजसवारी पर चंवरों और छत्रों के बीच आ रहे थे। राजा उग्रसेन, उनके कुटुंबी-जन और राजदरबारी सब मिलकर राजा समुद्रविजय और बरात का बड़े उछाह से स्वागत कर रहे थे।

बरात धीरे-धीरे विवाह-मंडप की ओर जा रही थी। अचानक एक ऐसी घटना घटी, जिसने सारा रंग ही पलट दिया, नेमिनाथ और राजुल के जीवन को नई दिशा में मोड़ दिया।

बरात जब भोजनशाला के पास से गुजर रही थी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक तरफ से बहुत-से पशुओं के चिल्लाने और बिल-बिलाने की आवाज नेमिनाथ के कानों में पड़ी। उन्होंने सारथी से पूछा, "यह क्या है ?"

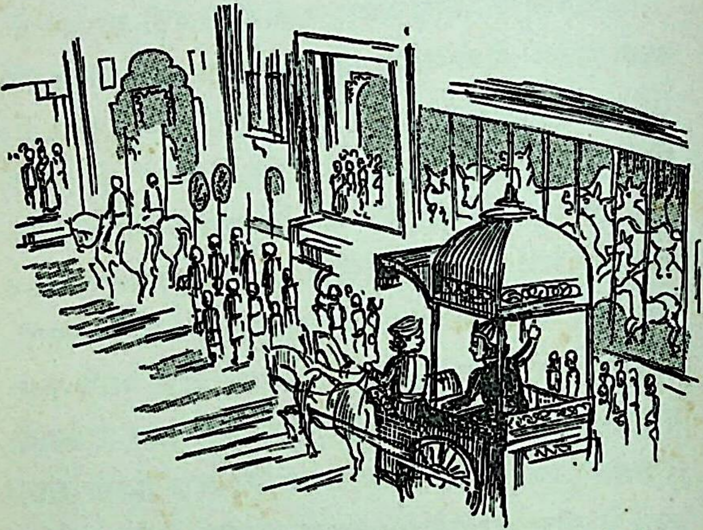

पशुओं का चीखना सुनकर नेमिनाथ ने पूछा, "यह क्या है ?"

सारथी ने उत्तर दिया, "आपके विवाह में दावत के लिए ये पशु इकट्ठे किये गये हैं।"

राजकुमार की समझ में कुछ नहीं आया। उन्होंने फिर पूछा, "तुम्हारा मतलब ?"

सारथी ने समझाया, "आपके विवाह में मांस खाने वाले लोगों के लिए पशुओं को मारकर इनका मांस-पकाया जायगा। अपनी मौत को सामने देखकर ही ये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशु चिल्ला रहे हैं।

सारथी की यह बात सुनकर नेमिनाथ के हृदय को गहरी चोट लगी। कहां उनकी दया-भावना और कहां यह निर्दय काम ! तरह-तरह के विचार उनके मन में उठने लगे। फिर उन्होंने सारथी को पशुओं के बाड़े की ओर चलने को कहा। वहां जाकर उन्होंने सबसे पहले उन पशुओं को छोड़ देने की आज्ञा दी। सब पशु छोड़ दिये गये।

बरात में खलबली मच गई। राजा समुद्रविजय और उग्रसेन ने यह बात सुनी तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ; पर उन्होंने समझा कि बात यहीं समाप्त हो जायगी। लेकिन भगवान को तो कुछ और ही मंजूर था। राजकुमार का हृदय वैराग-भावना से भर गया। उन्होंने विवाह न करने और संसार छोड़ साधु के व्रत लेकर तप करने का निश्चय किया। विवाह की पोशाक, आभूषण, मुकुट और कंगन आदि सब उन्होंने उतार दिये और रथ से उतरकर जंगल की ओर चलने को तैयार हो गये। इतने में उनके पिता, कृष्ण, दूसरे कुटुंबी और राजा उग्रसेन वहां आ पहुंचे। एक-एक करके सबने उन्हें समझाया। कहा कि जिन पशुओं के दुःख के कारण आपके हृदय को चोट लगी है, उन्हें छोड़ दिया गया है। यह भी कहा गया कि आपके इस तरह चले जाने से दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुटुंबों के स्त्री-पुरुषों को, माता-पिता को और राजकुमारी राजमती को बड़ा दुःख होगा। अंत में उन्हें समझाया गया कि त्याग और तप का जीवन बड़ा कठिन है; पर उन्होंने एक न सुनी। अपने इरादे पर अटल रहे। अब वह साधु बनकर तप के लिए जूनागढ़ के पास ही गिरनार पर्वत की ओर चल पड़े। उनके शरीर पर अब कोई भी कपड़े और आभूषण न थे। संसार के पानी के बबूले-जैसे सुखों को लात मारकर वह मोक्ष के हमेशा रहनेवाले सुखों को खोजने जा रहे थे।

लोग समझाकर हार गये तो लाचार होकर उन्होंने होनी को बलवान समझकर अपने मन को तसल्ली दी।

: २ :

राजकुमारी ने ये सब बातें सुनीं तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह फूट-फूटकर रोने लगी। विवाह के सब वस्त्र-आभूषण उसने उतार फेंके। अपने सिर को धुनने लगी और बाल नोचने लगी। कुछ समय बाद वह मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ी। उसके माता-पिता और कुटुंबीजन पहले ही दुखी थे। बेटी के इस रुदन को कैसे सहन कर सकते थे! उन्होंने राजुल को तरह-तरह से समझाना शुरू किया। कहा कि अभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिगड़ा ही क्या है ? तुम इस बात को भूल जाओ। मां-बाप ने यहांतक कहा कि तुम्हारे लिए शीघ्र ही नेमिनाथ से भी अच्छा वर ढूंढ़ देंगे। पर माता-पिता की यह दलील राजमती के हृदय पर तीर के समान लगी। उसने व्याकुल होकर कांपती हुई आवाज में लज्जा के साथ कहा, "आप यह क्या कहते हैं ? मैं मन में जिसे एक बार पति मान चुकी हूं उसे छोड़कर किसी दूसरे को कैसे स्वीकार कर सकती हूं ? मैं विवाह करूंगी तो नेमिनाथ से नहीं तो मैं भी उनके ही रास्ते पर जाऊंगी।"

माता-पिता ने उसे फिर ऊंच-नीच समझाई, दुनियादारी की बातें बताईं; पर राजमती कब मानने वाली थी। उसने उनसे कहा कि आप मुझे आज्ञा दीजिये। मैं वन में जाकर स्वयं उन्हें समझाने की कोशिश करूंगी।

माता-पिता ने लाचार होकर उसे आज्ञा दे दी। अपनी कुछ सखियों के साथ राजमती गिरनार पर्वत की ओर चल पड़ी।

उसके मन में तूफान उठ रहा था।

: ३ :

गिरनार पर्वत के पास पहुंचकर राजमती ने अपने रथ और सखियों को छोड़ दिया और अकेली उस स्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पहुंची, जहां नेमिनाथ एक शिला पर तप कर रहे थे। कुछ ही दिन के तप, व्रत और उपवास से उनका शरीर कुम्हला गया था। पर उनके चेहरे पर एक तपस्वी का-सा तेज था।

राजमती उनका तेज देखते ही समझ गई कि उसका काम कितना कठिन है; फिर भी वह धीरज और हिम्मत के साथ आगे बढ़ी। वह सोच रही थी कि पास जाकर यह कहेगी, वह कहेगी; पर ज्योंही वह उनके सामने पहुंची, सबकुछ भूल गई। संभली तो समझ ही नहीं पाई कि क्या कहे और कैसे कहे। कुछ देर डर और लज्जा से चुपचाप खड़ी नेमिनाथ के दर्शन करती रही। थोड़ी देर में उसे ध्यान आया कि वह दर्शन करने नहीं, समझाकर और मनाकर उन्हें घर ले जाने के लिए आई है। उसने साहस बटोरकर कुछ कहना चाहा, पर एक शब्द भी उसके मुंह से न निकला। वह नेमिनाथ के चरणों में गिर पड़ी और रोने लगी।

नेमिनाथ न हिले, न डुले और न उन्होंने राजमती से कुछ कहा। राजमती ने सिर उठाया और आंसुओं को पोंछकर बोली, "स्वामी, आप यहां गिरनार पर्वत पर चले आये। द्वारका में आपके माता-पिता और भाई-बहन बेहाल हो रहे हैं। जूनागढ़ में मेरे माता-पिता की बुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हालत है। वे न खाना खाते हैं, न पानी पीते हैं। रोते-रोते उनकी आंखें सूज गई हैं। आप चलिये और उनका दुःख दूर कीजिये।"

यह कहकर राजमती चुप हो गई और उत्तर के

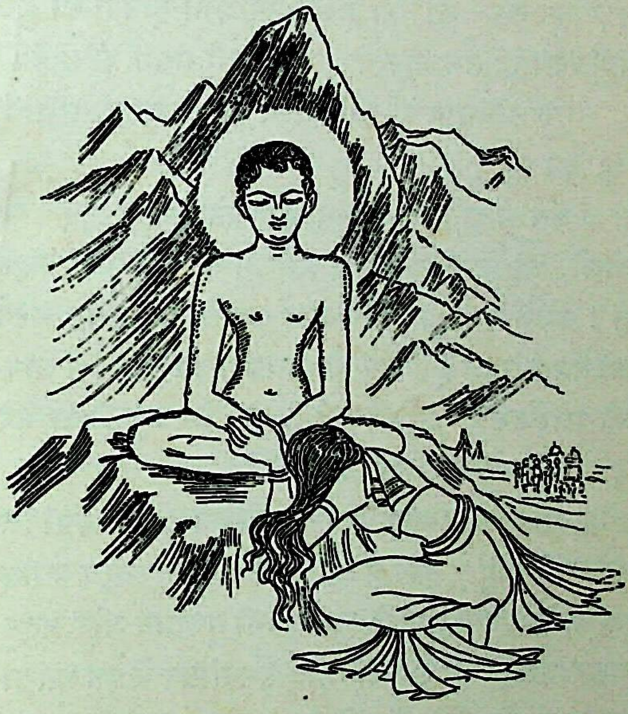

राजमती नेमिनाथ के चरणों में गिर पड़ी और रोने लगी।

लिए नेमिनाथ के मुंह की ओर देखने लगी। पर नेमिनाथ कुछ न बोले। तब राजमती ने उन्हें द्वारका की सुंदरता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उनके संगी-साथियों तथा राजमहलों के सुखों की याद दिलाई, लौट आने के लिए सबका आग्रह बताया, लेकिन नेमिनाथ पर इसका भी कुछ असर न हुआ।

राजमती फिर कहने लगी, "हे नाथ, आपकी यह उम्र तप करने की नहीं है। आपने अभी दुनिया का कुछ नहीं देखा है। तप और तपस्या का भी समय होता है।"

पर नेमिनाथ पर इस सबका क्या असर होना था! वह चुप रहे।

अंत में उनकी दया-भावना को जगाते हुए वह बोली, "हे दयानाथ, आप प्राणिमात्र का सुख चाहते हैं। उनके दुःख के पीछे आप बड़े-से-बड़ा त्याग करने को तैयार रहते हैं। आप ही बताइये, इस संसार में आप-को छोड़कर मेरा कौन है? हे दीनबंधु, क्या मेरे दुःख को आप दूर नहीं करेंगे?"

नेमिनाथ अबतक चुप थे; लेकिन उन्होंने देखा कि राजमती मोह में डूबी है तो वह उसे ठीक रास्ता बताते हुए बोले, "राजकुमारी, तुम इतनी गुणवान और चतुर होकर भी ऐसी बातें करती हो! इस संसार में इस आत्मा का लगाव किसीसे भी नहीं है। न उसका कोई बाप है, न मां; न भाई, न बहन। यह शरीर भी आत्मा का अपना नहीं है। बस, धर्म ही उसके काम आता है। तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी धर्म की शरण लो और अपना कल्याण करो। मुझे इस रास्ते से हटाने की बेकार कोशिश न करो।"

यह सुनते ही राजमती मूर्च्छित होकर वहीं गिर पड़ी।

इतने में उसकी दो सखियां, जो आड़ में खड़ीं सब बातें सुन रही थीं, सामने आ गईं। एक ने राजमती को सहारा देकर उठाया। दूसरी नेमिनाथ से बोली, "हे यादवेश, देखिए, आपके वियोग में राजकुमारी का शरीर कैसा हो गया है! दिन-रात सोते-जागते यह आपका ही नाम रटती रहती है। इसपर दया कीजिये।

फिर कुछ रुककर कहने लगी, "संत-महात्मा हमेशा सबका मनोरथ पूरा करते हैं। आप भी हमारी राजकुमारी की मनोकामना पूरी कीजिये। अपने माता-पिता, संगी-साथी और राजा उग्रसेन की अभिलाषा पूरी कीजिये।"

पर नेमिनाथ अपने निश्चय पर अटल रहे। उन्होंने उस सखी के द्वारा फिर राजमती को धर्म-पालन का उपदेश दिया।

राजमती और उसकी सखियों ने बहुतेरी कोशिश की; लेकिन वे नेमिनाथ को लौटाने में सफल न हो सकीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब राजमती ने दीक्षा ले ली और वह घरबार सबकुछ छोड़कर त्याग-तप का जीवन बिताने लगी। नेमिनाथ ने अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच व्रतों का पूरी तरह से पालन किया। कठोर तपस्या के द्वारा उन्होंने पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। जगह-जगह पैदल घूमकर जनता को अहिंसा और जीव-दया का उपदेश दिया। अंत में गिरनार पर्वत से उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। वह जैनों के बाईसवें तीर्थंकर हुए हैं।

आज गिरनार भारत का एक बड़ा तीर्थ माना जाता है। दूर-दूर से हजारों यात्री यहां नेमिनाथ के दर्शन के लिए आते रहते हैं।

❀ मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय ❀
वाराणसी।
आगत क्रमांक........1991........
दिनांक..................................

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भवन वेद वेदांग विद्यालय
पुस्तकालय
आगत क्रमांक....
दिनांक....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## 'मंडल' के विशिष्ट प्रकाशन

ध्रुवोपाख्यान
उदयन कथा
जीवन-पराग
हीरे और मोती
बेकार कुछ नहीं
शिष्टाचार
सच्चे इन्सान बनो

सस्ता साहित्य मण्डल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri